वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 | अंक: 50 | शुक्रवार 24 जुलाई 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

केन्द्रीय कैबिनेट सचिव ने की दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण नियंत्रण उपायों की समीक्षा

प्रदूषणकारी वाहनों और औद्योगिक प्रदूषण की रोकथाम के लिए उठाए प्रभावी कदमः श्रीनिवास

राज्य सरकार एनसीआर में वायु गुणवत्ता सुधार के लिए प्रतिबद्ध

जयपुर. शाबाश इंडिया

केंद्र सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय द्वारा दिल्ली एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए गठित समिति की समीक्षा बैठक गुरुवार को कैबिनेट सचिव डॉ. टी.वी. सोमनाथन की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित हुई। बैठक में राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं पंजाब के मुख्य सचिव अपने-अपने राज्यों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। राजस्थान की ओर से मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने राजस्थान सचिवालय स्थित एनआईसी कक्ष से बैठक में भाग लिया। बैठक में केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट (सीएक्यूएम), केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी), नीति आयोग, एनसीआर प्लानिंग बोर्ड तथा अन्य संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए। मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने राजस्थान की ओर से राज्य में वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार परिवर्तन कार्यक्रम के तहत एनसीआर क्षेत्र में 5,268 पुराने एवं प्रदूषणकारी वाहनों के चरणबद्ध प्रतिस्थापन की दिशा में कार्य कर रही है। इसके साथ ही इलेक्ट्रिक बसों के संचालन का लगातार विस्तार किया जा रहा है, जिससे स्वच्छ एवं टिकाऊ सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा मिल रहा है। उन्होंने कहा कि सड़क धूल नियंत्रण के लिए यांत्रिक सड़क सफाई सहित अन्य प्रभावी उपायों को प्राथमिकता के साथ लागू किया जा रहा है।

इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने पर जोर

डॉ. सोमनाथन ने राज्यों को वायु प्रदूषण नियंत्रण से जुड़े कार्यों को तय समय सीमा में पूरा करने तथा सभी संबंधित विभागों के बीच प्रभावी समन्वय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सड़क धूल नियंत्रण, पुराने एवं प्रदूषणकारी वाहनों के चरणबद्ध प्रतिस्थापन, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने, निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट (सी एंड डी वेस्ट) के वैज्ञानिक प्रबंधन, निर्माण स्थलों की प्रभावी निगरानी, औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण, वायु गुणवत्ता की नियमित निगरानी, पराली एवं बायोमास जलाने पर रोक तथा पौधारोपण जैसे उपायों को प्राथमिकता के साथ लागू करने पर जोर दिया। बैठक में राज्यों द्वारा प्रस्तुत कार्ययोजना तथा अब तक हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए कैबिनेट सचिव ने विभिन्न उपायों के समयबद्ध क्रियान्वयन पर विशेष जोर दिया।

वायु गुणवत्ता की नियमित निगरानी की गई

श्रीनिवास ने बताया कि राज्य में निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट (सी एंड डी वेस्ट) के वैज्ञानिक प्रबंधन, निर्माण स्थलों की प्रभावी निगरानी, वायु गुणवत्ता की नियमित निगरानी, औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण तथा पराली एवं बायोमास जलाने की रोकथाम के लिए भी प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में संचालित एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत प्रदेशभर में व्यापक स्तर पर पौधारोपण किया जा रहा है। साथ ही राज्य सरकार कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट (सीएक्यूएम) तथा केंद्र सरकार के साथ नियमित समन्वय बनाए रखते हुए निर्धारित कार्ययोजना के अनुरूप आवश्यक कदम उठा रही है।

प्रदेश के प्रमुख मंदिरों को मिलेगा भव्य स्वरूप, धार्मिक पर्यटन को नई गति देने की तैयारी

पैनोरमाओं के संरक्षण से लेकर आस्था धामों के विकास तक, मुख्यमंत्री ने तय किया रोडमैप

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में राजस्थान धरोहर प्राधिकरण की उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में प्रदेश के प्रमुख आस्था धामों एवं धार्मिक स्थलों के विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने सभी प्रगतिरत परियोजनाओं को निर्धारित समयसीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा करने तथा नई परियोजनाओं की निविदा प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य धार्मिक स्थलों को भव्य स्वरूप प्रदान करने के साथ श्रद्धालुओं को बेहतर और आधुनिक आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना है, जिससे धार्मिक पर्यटन को भी नई गति मिल सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के प्रमुख आस्था केंद्रों पर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु पहुंचते हैं। ऐसे में पेयजल, स्वच्छता,

बिजली, पार्किंग, विश्राम स्थल, यातायात, सुरक्षा और सुगम आवागमन जैसी सुविधाओं का विकास प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी विकास कार्यों में गुणवत्ता के साथ समयबद्धता सुनिश्चित की जाए तथा नियमित मॉनिटरिंग की जाए। बैठक में मुख्यमंत्री ने राजस्थान धरोहर प्राधिकरण और अजमेर विकास प्राधिकरण को समन्वय के साथ ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर, पुष्कर सरोवर परिक्रमा मार्ग तथा घाटों के विकास कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के पूरा होने से श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और पुष्कर की धार्मिक एवं पर्यटन पहचान को और मजबूती मिलेगी। मुख्यमंत्री ने देवस्थान विभाग को तनोट माता मंदिर से जुड़े फेज-1 के विकास कार्यों को शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश देते हुए कहा कि सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित इस महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल पर श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक सुविधाओं का विस्तार किया जाए। उन्होंने पूंछरी का लौठा में चल रहे विकास कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। साथ ही डीग जिला कलक्टर को आगामी गुरु पूर्णिमा मेले की सभी तैयारियां समय से पूरी करने के लिए कहा।

आचार्य श्री धर्मसागर जी की समाधि स्थली एवं आर्यिका श्री शांतिमति जी की जन्मभूमि सीकर में आचार्य संघ का मंगल पदार्पण

समाज ने मंगल आरती कर की भावभीनी अगवानी, 37 पिच्छीधारी साधु-साध्वियों का हुआ नगर प्रवेश

सीकर. शाबाश इंडिया

आचार्य श्री धर्मसागर जी की समाधि स्थली, आर्यिका श्री शांतिमति जी की जन्मभूमि तथा आचार्य श्री अजितसागर जी सहित अनेक संतों की दीक्षा स्थली धर्मनगरी सीकर में गुरुवार को परंपरा के आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का 58वें वर्षायोग के लिए मंगल पदार्पण हुआ। समाज ने मंगल आरती एवं भव्य स्वागत के साथ आचार्य संघ की अगवानी की। जैन धर्म की समृद्ध परंपरा से अलंकृत सीकर नगरी में श्री आदिनाथ (3), श्री पद्मप्रभ (1), श्री चंद्रप्रभ (2), श्री शांतिनाथ (2), श्री पार्श्वनाथ (2) तथा श्री महावीर भगवान (1) सहित अनेक जिनालय स्थापित हैं। यह नगर आचार्य श्री धर्मसागर जी सहित अनेक संतों की समाधि स्थली, आर्यिका श्री शांतिमति जी की जन्मभूमि तथा अनेक आचार्यों की तप, साधना और दीक्षा स्थली के रूप में विख्यात है। आचार्य श्री वर्धमानसागर जी के साथ 37 पिच्छीधारी संघ ने नगर में प्रवेश किया। संघ में 1 आचार्य, 10 मुनिराज, 20 आर्यिकाएं, 1 ऐलक, 4 क्षुल्लक तथा 1 क्षुल्लिका शामिल हैं। संघ में मुनि श्री हितेंद्रसागर, प्रभवसागर, चिंतनसागर, दर्शितसागर, प्रबुद्धसागर, मुमुक्षुसागर, प्रणीतसागर, ध्येयसागर, भुवनसागर एवं गुणोदयसागर सहित आर्यिका श्री शुभमति, चैत्यमति, विलोकमति, दिव्यांशुमति, पूर्णिमामति, मुदितमति, विचक्षणमति, समर्पितमति, निर्मुक्तमति, विनम्रमति, दर्शनामति, देशनामति, महायशमति, देवर्धिमति, प्रणतमति, निर्मोहमति, पद्मयशमति, दिव्ययशमति, प्रेक्षामति एवं जिनेशमति, ऐलक श्री हर्षसागर, क्षुल्लक श्री प्राप्तिसागर, सुभगसागर, सुगुप्तसागर, प्रतिज्ञासागर तथा क्षुल्लिका श्री प्रदीप्तमति शामिल हैं।

राग, द्वेष और मोह आत्मा के सबसे बड़े रोग

श्री धर्मसागर सभागृह में आयोजित धर्मसभा के प्रथम दिवस आचार्य श्री वर्धमानसागर जी ने कहा कि राग, द्वेष और मोह आत्मा पर लगे सबसे बड़े रोग हैं। जब तक ये रोग बने रहते हैं, तब तक जीव दुखी रहता है। समता और साम्यभाव ही मनुष्य का सबसे बड़ा धन है। उन्होंने कहा कि नगर में चिकित्सालय शरीर के रोगों का उपचार करते हैं और विद्यालय लौकिक शिक्षा प्रदान करते हैं, लेकिन जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाने वाला सबसे बड़ा चिकित्सालय संतों का संघ है। आत्मा पर कर्मबंध के कारण राग, द्वेष और मोह जैसे रोग उत्पन्न होते हैं और इन्हें दूर करने के लिए ही आचार्य संघ नगर में आया है। आचार्य श्री ने कहा कि शरीर नश्वर है और प्रत्येक जीव अपने कर्मों के अनुसार आयु का बंध करता है। बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था और अंततः मृत्यु–यह संसार का स्वाभाविक क्रम है। सीकर हमारे दीक्षागुरु आचार्य श्री धर्मसागर जी की समाधि भूमि है। उन्होंने अपने जीवन में समता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। समता ही वास्तविक धन है। उन्होंने समाज से आह्वान किया कि संतों के उपदेश एवं मार्गदर्शन से अपने मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करें।

इन परिवारों को मिला धार्मिक सौभाग्य

समाज के पदाधिकारियों ने बताया कि मंचासीन कार्यक्रम के दौरान चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के बाद आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन का सौभाग्य राजकुमार-चंदा देवी भरतिया परिवार (सीकर) को प्राप्त हुआ। जिनवाणी भेंट करने का सौभाग्य ऋषभ एवं श्रीमती बबीता सेठी परिवार को तथा महाआरती का सौभाग्य पूरणमल, अजीत एवं आशीष जयपुरिया परिवार (सीकर) को प्राप्त हुआ।

सीकर अनेक संतों की समाधि एवं जन्मभूमि

सीकर में आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री विवेकसागर जी तथा आर्यिका श्री विद्यामति सहित अनेक संतों की समाधियां स्थित हैं। यह नगर अनेक तपस्वी संतों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि भी रहा है। नगर की श्रीमती भगवानी देवी जिनेंद्र जयपुरिया ने 2 नवंबर 2022 को महावीरजी में आचार्य श्री वर्धमानसागर जी से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर आर्यिका श्री शांतिमति जी का नाम प्राप्त किया। इससे पूर्व 4 अगस्त 2022 को उन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा भी ग्रहण की थी। संलेखना साधना के अंतर्गत मात्र 25 दिनों में तीन बार जल ग्रहण कर 25 नवंबर 2022 को उन्होंने आचार्य श्री के सान्निध्य में उत्कृष्ट समाधि प्राप्त की। इसी प्रकार नगर की वरग देवी ने वर्ष 1976 में मुजफ्फरनगर में आचार्य श्री धर्मसागर जी से आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिका श्री चेतनमति का नाम प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त भी नगर से अनेक श्रद्धालुओं ने संयम एवं दीक्षा का मार्ग अपनाया।

आचार्य श्री अजितसागर जी सहित अनेक संतों की दीक्षा स्थली है सीकर

समाज के अनुसार संवत 2018 (सन 1961) में आचार्य श्री शिवसागर जी ने सीकर में चातुर्मास के दौरान श्री अजितसागर जी को मुनि दीक्षा, श्री सुपार्श्वसागर जी को क्षुल्लक दीक्षा तथा बुद्धिमती, जिनमती, राजुलमति, संभवमति एवं आदिमति को आर्यिका दीक्षा प्रदान की थी। वहीं श्री श्रेयांशमति को क्षुल्लिका दीक्षा भी यहीं प्रदान की गई थी।

– जानकारी : डॉ. राजेश पंचोलिया, इंदौर

शहीद चंद्रशेखर आजाद जयंती पर श्रद्धांजलि एवं देशभक्ति कार्यक्रम आयोजित

कोटा. शाबाश इंडिया। चंद्रशेखर आजाद पार्क सोसाइटी, सेक्टर-4, तलवंडी की कार्यकारिणी की ओर से अमर क्रांतिकारी शहीद चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर बुधवार प्रातः 7:30 बजे चंद्रशेखर आजाद पार्क में श्रद्धांजलि एवं देशभक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ शहीद चंद्रशेखर आजाद के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। इस अवसर पर श्याम द्विवेदी ने ओजपूर्ण देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर उपस्थित जनों में राष्ट्रभक्ति का उत्साह भर दिया। कार्यक्रम के संयोजक मुकेश सक्सेना ने आयोजन की समस्त तैयारियों एवं व्यवस्थाओं का सफल संचालन किया, जिसकी उपस्थित सदस्यों ने सराहना की। इस अवसर पर मनीष जैन ने शहीद चंद्रशेखर आजाद के जीवन, उनके अद्वितीय साहस, त्याग और देश की स्वतंत्रता के लिए दिए गए सर्वोच्च बलिदान पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सभी को परिचित कराया। कार्यक्रम में पूर्व वार्ड पार्षद संजीव विजय की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने शहीद चंद्रशेखर आजाद के आदर्शों को आत्मसात करते हुए राष्ट्र एवं समाज की सेवा के लिए समर्पित रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर ओ.पी. गुप्ता, रवीन्द्र विजय, अनुराग सक्सेना, जयंत ठाकुर, खेमराज अग्रवाल, श्याम द्विवेदी, बनवारी पंचोली, प्रेम प्रकाश मदान, मूलचंद जेठमलानी, प्रवीण शर्मा, शिव प्रकाश गुप्ता, सत्येन्द्र सिंह झाला, सुरेन्द्र चौधरी, बनवारी विजय, ओ.पी. सैनी सहित सोसाइटी के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

अष्टान्हिका पर्व पर वैशाली नगर जैन मंदिर में सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

अष्टान्हिका पर्व के पावन अवसर पर श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर, वैशाली नगर में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया जा रहा है। विधान का संचालन दिल्ली के विद्वान पंडित श्री जयकुमार जी द्वारा विधि-विधान एवं धार्मिक उत्साह के साथ कराया जा रहा है। श्रीमती विनीता बोहरा ने बताया कि विधान के तीसरे दिन तृतीय वलय में श्रद्धालुओं द्वारा 32 अर्घ्य समर्पित किए गए। वहीं श्री संदीप जैन ने बताया कि प्रतिदिन सायंकाल आरती के उपरांत पंडित श्री द्वारा सामायिक कराई जाती है तथा धर्म प्रवचन के माध्यम से श्रद्धालुओं को जिनवाणी का संदेश प्रदान किया जाता है। अष्टान्हिका पर्व के प्रथम दिवस ध्वजारोहण का सौभाग्य समाजश्रेष्ठी श्री शांतिकुमार जैन, संजय-विनीता बोहरा, संदीप-अनीता बोहरा, ऋषि-मानसी बोहरा, अक्षत, कृतिक एवं अन्नया बोहरा परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं मुख्य कलश स्थापना का सौभाग्य अशोक-संतोष पाटनी तथा राहुल-पूर्वा पाटनी, दक्ष एवं नक्ष पाटनी परिवार ने प्राप्त किया। श्रीमती संतोष पाटनी ने बताया कि बुधवार को विधान के क्रम में चतुर्थ वलय में 64 अर्घ्य समर्पित किए जाएंगे। विधान का समापन 29 जुलाई को हवन एवं पूर्णाहुति के साथ संपन्न होगा।

धावास जैन मंदिर में उमड़ रहा श्रद्धा का सैलाब

सिद्धचक्र महामंडल विधान में भक्तिभाव से समर्पित हुए 32 अर्घ्य

जयपुर. शाबाश इंडिया

अजमेर रोड स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, धावास में राष्ट्रसंत आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज की सुयोग्य शिष्या आर्यिका श्री सुविज्ञमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित नौ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। पूरा मंदिर परिसर भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक उल्लास से सराबोर है। मंदिर समिति के संरक्षक एवं निर्माण संयोजक जयकुमार जैन-बड़जात्या ने बताया कि विधान के अंतर्गत मंगलवार को सौधर्म इन्द्र, कुबेर इन्द्र, मैना सुंदरी-श्रीपाल तथा यज्ञ नायक के नेतृत्व में श्रद्धालुओं द्वारा 32 अर्घ्य समर्पित किए गए। मंदिर समिति के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार बैद ने बताया कि बाल ब्रह्मचारिणी श्रेया दीदी एवं प्रतिष्ठाचार्य अक्षय भैया के निर्देशन में मंडल पूजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंदिर समिति के परम संरक्षक एवं गुरुभक्त गजेंद्र कुमार बड़जात्या, प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सुनील जैन तथा आयुर्वेदाचार्य डॉ. नरेंद्र शर्मा सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। समिति के मंत्री नितेश ठोलिया ने बताया कि सायंकाल आराधना के उपरांत श्री सन्मति सुनीलम् महिला मंडल के निर्देशन में सिद्धचक्र महामंडल विधान पर आधारित धार्मिक हाउजी का रोचक एवं ज्ञानवर्धक आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समिति से जुड़े नरेश सौगाणी एवं प्रमोद जैन ने बताया कि मंदिर में उमड़े श्रद्धालुओं और भक्तिमय वातावरण को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो देवगण स्वयं धावास मंदिर की पावन धरा पर अवतरित हो गए हों। कार्यकारिणी सदस्य विनय जैन ने बताया कि विधान में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य प्रेमलता ठोलिया परिवार, यज्ञ नायक बनने का सौभाग्य हैमेन्द्र लुहाड़िया परिवार, कुबेर इन्द्र बनने का सौभाग्य जयकुमार जैन-बड़जात्या परिवार तथा मैना सुंदरी-श्रीपाल बनने का सौभाग्य मनोज-सीमा बड़जात्या परिवार को प्राप्त हुआ।

राजनीति

हरियाली की नई उड़ान

कांतिलाल मांडोत

जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, भूजल संकट और वायु प्रदूषण जैसी चुनौतियों के बीच हरित क्षेत्र का विस्तार केवल पर्यावरण संरक्षण का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन, कृषि, जल सुरक्षा और भविष्य की पीढ़ियों से जुड़ा राष्ट्रीय दायित्व बन गया है। ऐसे समय में राजस्थान का वन एवं वृक्ष आवरण बढ़ाने के मामले में देश में चौथे स्थान पर पहुंचना उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह संदेश देता है कि सरकार, समाज और स्थानीय समुदाय मिलकर कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी हरियाली बढ़ा सकते हैं। भारत वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर-2023) के अनुसार वर्ष 2021 से 2023 के बीच राजस्थान में 394.46 वर्ग किलोमीटर वन एवं वृक्ष आवरण बढ़ा है। इस उपलब्धि के साथ राज्य देश में चौथे स्थान पर पहुंचा है। राष्ट्रीय स्तर पर इसी अवधि में कुल वन एवं वृक्ष आवरण 1,445.81 वर्ग किलोमीटर बढ़कर देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 25.17 प्रतिशत हो गया है। यह हरित विकास की दिशा में सकारात्मक संकेत है, हालांकि अभी लंबा सफर तय करना शेष है। राजस्थान की उपलब्धि इसलिए विशेष महत्व रखती है क्योंकि यह राज्य लंबे समय से मरुस्थलीय परिस्थितियों, कम वर्षा, जल संकट और सीमित वन क्षेत्र जैसी चुनौतियों का सामना करता रहा है। इसके बावजूद वर्ष 2021 में राज्य का वन एवं वृक्ष आवरण 26,994.87 वर्ग किलोमीटर से बढ़कर वर्ष 2023 में 27,389.33 वर्ग किलोमीटर हो गया। यह योजनाबद्ध प्रयासों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जनभागीदारी का परिणाम है। राज्य सरकार ने हरियाली को केवल वन विभाग तक सीमित न रखकर सामाजिक अभियान का स्वरूप दिया। ग्रीन इंडिया मिशन, कैम्पा, नगर वन योजना और एक पेड़ मां के नाम जैसे अभियानों ने लोगों को वृक्षारोपण से भावनात्मक रूप से जोड़ा। वहीं मिशन हरियालो राजस्थान के माध्यम से वृक्ष लगाने के साथ उनके संरक्षण पर भी समान बल दिया गया। पिछले वर्ष राज्य में दस करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए और बजट 2026-27 में भी प्रत्येक परिवार की भागीदारी से दस करोड़ पौधे लगाने तथा उनका संरक्षण सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है।

संपादकीय

शिक्षा में सुधार आखिर कब और कैसे?

भारत दुनिया का सबसे बड़ा शिक्षा तंत्र संचालित करता है। देश में लगभग 14.7 लाख स्कूलों में 24.7 करोड़ से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। प्राथमिक स्तर पर नामांकन दर लगभग सार्वभौमिक हो चुकी है, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता अब भी गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। एएसईआर 2024 रिपोर्ट के अनुसार, कक्षा 3 के केवल 27.1 प्रतिशत बच्चे कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ पाते हैं, जबकि कक्षा 5 के मात्र 30.7 प्रतिशत

विद्यार्थी बुनियादी विभाजन करने में सक्षम हैं। नीति आयोग की 2026 रिपोर्ट भी स्पष्ट करती है कि शिक्षा तक पहुंच बढ़ने के बावजूद सीखने की गुणवत्ता, माध्यमिक स्तर पर ड्रॉपआउट, शिक्षकों की कमी और बुनियादी ढांचे की खामियां अब भी बड़ी चुनौतियां हैं। पिछले दस वर्षों में 94 हजार से अधिक सरकारी स्कूल बंद हो चुके हैं, अर्थात प्रतिदिन औसतन 25 स्कूलों का अस्तित्व समाप्त हुआ। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या यह सुधार की दिशा है या शिक्षा तक पहुंच का संकुचन। दूसरी ओर, नीट पेपर लीक, प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताएं तथा परीक्षा प्रणाली की बार-बार सामने आने वाली कमियां युवाओं का विश्वास कमजोर कर रही हैं। लाखों विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेते हैं, लेकिन कौशल विकास और रोजगारोन्मुख शिक्षा के अभाव में शिक्षित बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है। उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) लगभग 28.4 प्रतिशत है, जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने वर्ष 2035 तक इसे 50 प्रतिशत तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। चिंता का विषय यह भी है कि शिक्षा मंत्रालय के बजट का हिस्सा वर्ष 2013-14 के लगभग 4.6 प्रतिशत से घटकर 2025-26 में करीब 2.5 प्रतिशत रह गया है। शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 6 प्रतिशत खर्च करने का वर्षों पुराना लक्ष्य आज भी अधूरा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा में शिक्षा, बहुभाषी व्यवस्था, समग्र विकास, व्यावसायिक शिक्षा तथा बहु-प्रवेश-बहु-निकास जैसी महत्वाकांक्षी अवधारणाएं प्रस्तुत कीं। समग्र शिक्षा 3.0, पीएम श्री स्कूल और निपुण भारत जैसी योजनाएं इसी दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं। कई राज्यों में कक्षा 1 से 12 तक के कंपोजिट स्कूल मॉडल की शुरूआत भी सकारात्मक पहल मानी जा रही है। नीति आयोग ने छोटे स्कूलों को स्कूल कॉम्प्लेक्स में विकसित करने, स्टेट स्कूल स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी के गठन तथा संसाधनों के बेहतर उपयोग की सिफारिश की है। हालांकि, इन नीतियों का क्रियान्वयन सभी राज्यों में समान रूप से नहीं हो पाया है। तीन-भाषा सूत्र को लेकर मतभेद, शिक्षक प्रशिक्षण में देरी, डिजिटल डिवाइड और ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की कमी अभी भी बड़ी बाधाएं हैं। सरकारी स्कूलों से निजी विद्यालयों की ओर पलायन लगातार बढ़ रहा है और सरकारी स्कूलों में नामांकन घटकर लगभग 49 प्रतिशत रह गया है। शिक्षा सुधार के लिए सबसे पहले शिक्षा पर जीडीपी का कम से कम 6 प्रतिशत खर्च सुनिश्चित करना होगा।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

एलबीएसएनएए की गरिमा पर सवाल?

डॉ. प्रियंका सौरभ

सोशल मीडिया के दौर में किसी भी संस्थान, व्यक्ति या घटना के बारे में धारणा बनाना पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। कुछ तस्वीरें, वायरल पोस्ट या व्यक्तिगत घटनाएँ देखते ही पूरे संस्थान की छवि गढ़ दी जाती है। हाल के दिनों में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए) को लेकर भी ऐसा ही विमर्श सामने आया। कुछ लोगों ने व्यंग्य करते हुए इसे 'विवाह ब्यूरो' या 'स्वयंवर' तक कह दिया। यह टिप्पणी केवल हास्य नहीं, बल्कि देश की सर्वोच्च प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्था की गरिमा और वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारी प्रशिक्षुओं की पेशेवर निष्ठा पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। एलबीएसएनएए भारत की प्रशासनिक व्यवस्था की सबसे प्रतिष्ठित प्रशिक्षण अकादमी है, जहाँ भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस), भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस), भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) सहित अनेक केंद्रीय सेवाओं के अधिकारी प्रशिक्षित होते हैं। यहाँ प्रशिक्षण केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि भारत दर्शन, ग्राम भ्रमण, ट्रेकिंग, सामुदायिक जीवन, नेतृत्व विकास, नीति-निर्माण अभ्यास और संकट प्रबंधन जैसी गतिविधियों के माध्यम से अधिकारियों को संवेदनशील, सक्षम और जिम्मेदार प्रशासक बनाया जाता है। देश के विभिन्न राज्यों, भाषाओं और सामाजिक पृष्ठभूमियों से आए युवा अधिकारी कई महीनों तक साथ रहते, सीखते और चुनौतियों का सामना करते हैं। ऐसे वातावरण में मित्रता विकसित होना स्वाभाविक है और कई बार यही मित्रता विवाह तक भी पहुँच सकती है। किंतु यह व्यक्तिगत निर्णय होता है, किसी संस्थान की संस्कृति या उद्देश्य का परिणाम नहीं। यदि किसी विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग संस्थान, प्रबंधन संस्थान, सैन्य अकादमी या निजी कंपनी में साथ पढ़ने अथवा काम करने वाले दो लोग विवाह कर लें, तो उस संस्था को विवाह ब्यूरो नहीं कहा जाता। फिर एलबीएसएनएए के संदर्भ में ऐसी टिप्पणी क्यों? इसका उत्तर हमारे सामाजिक पूर्वाग्रहों में छिपा है, जहाँ स्त्री-पुरुष की सामान्य मित्रता को भी अक्सर संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। वास्तविकता यह है कि अनेक अधिकारी पहले से ही किसी रिश्ते में होते हैं, कई परिवार की पसंद से विवाह करते हैं और अनेक अधिकारी प्रशिक्षण के बाद भी अविवाहित रहते हैं। कुछ अधिकारी प्रशिक्षण के दौरान एक-दूसरे को बेहतर समझने के बाद जीवनसाथी बनने का निर्णय लेते हैं। इन सभी परिस्थितियों में निर्णय पूरी तरह व्यक्तिगत होता है, संस्थान का नहीं। सोशल मीडिया अक्सर अपवादों को सामान्य नियम की तरह प्रस्तुत करता है। कुछ विवाहों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाल लेना कि अकादमी का उद्देश्य ही विवाह कराना है, तथ्यों से परे है। हजारों अधिकारी बिना किसी व्यक्तिगत संबंध के प्रशिक्षण पूरा कर देशभर में उत्कृष्ट प्रशासनिक सेवाएँ दे रहे हैं। दुर्भाग्य से उनके कार्यों की अपेक्षा निजी जीवन अधिक सुर्खियाँ बटोरता है। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से महिला अधिकारियों के संदर्भ में चिंताजनक है। आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था में महिला और पुरुष अधिकारी समान भागीदार हैं। उनके बीच सहयोग, संवाद और सम्मान प्रभावी प्रशासन की आवश्यकता है, न कि चर्चा या संदेह का विषय। यह भी याद रखना चाहिए कि अधिकारी प्रशिक्षु सबसे पहले नागरिक हैं। उन्हें भी मित्र बनाने, जीवनसाथी चुनने और निजी जीवन के निर्णय लेने का वही संवैधानिक अधिकार प्राप्त है, जो प्रत्येक भारतीय नागरिक को है।

चातुर्मास हेतु चोमू में आर्यिका श्री नंदीश्वरमति माताजी ससंघ का मंगल प्रवेश

आनंद यात्रा, भजन एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

चौमूं. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के पट्टशिष्य आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज की परम प्रभाविका शिष्या, बालयोगिनी, सरल स्वभावी, मोक्षमार्ग प्रकाशिका एवं प्रशांत निधि आर्यिका रत्न श्री 105 नंदीश्वरमति माताजी ससंघ का वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु फूलों की नगरी चोमू में भव्य एवं मंगलमय प्रवेश हुआ। श्रद्धालुओं ने जयघोष के साथ गुरु मां की अगवानी कर चातुर्मास का शुभारंभ किया। चातुर्मास समिति के प्रवक्ता पंकज बड़जात्या ने बताया कि आर्यिका श्री नंदीश्वरमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में प्रतिदिन प्रातः अभिषेक, शांतिधारा, धर्म प्रवचन एवं तत्पश्चात आहारचर्या का आयोजन किया जा रहा है। सायंकाल आरती, भजन, आनंद यात्रा सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम श्रद्धाभाव के साथ संपन्न हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि आनंद यात्रा के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी मंच में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को जयकुमार, राजेंद्र कुमार, महावीर प्रसाद एवं आलोक पाटनी द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रमों में जैन समाज के पदमचंद जैन, हीरालाल बड़जात्या, सुनील शेट्टी, पदम जैन, महेश जैन, संदीप पारस, विनोद छाबड़ा, राजेंद्र जैन, रविंद्र, अशोक, अजय, नेमीचंद, ताराचंद, शिल्पी जैन, सुनीता जैन, प्रियंका, चंदा देवी, ममता देवी, नेहा, शकुंतला देवी सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहीं।

जनकपुरी में चातुर्मास कलश स्थापना महोत्सव के पोस्टर का भव्य विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर, जनकपुरी-ज्योतिनगर, जयपुर में आचार्य श्री 108 आदित्यसागर जी महाराज ससंघ के 28वें पावन वर्षयोग-2026 के उपलक्ष्य में आगामी 26 जुलाई (रविवार) को आयोजित होने वाले मंगल कलश स्थापना महोत्सव के पोस्टर का भव्य विमोचन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंदिर के मूलनायक भगवान श्री 1008 नेमिनाथ स्वामी के श्रीचरणों में पोस्टर अर्पित कर किया गया। इसके पश्चात आचार्य श्री 108 आदित्यसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में पोस्टर का विधिवत विमोचन किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री ने अपने प्रेरणादाय उद्बोधन में धर्म प्रभावना, संयम, साधना एवं चातुर्मास के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अधिक से अधिक श्रद्धालुओं से धर्माराधना एवं धार्मिक आयोजनों में सहभागी बनने का आान किया। पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में वर्षयोग समिति, मंदिर प्रबंध समिति, महिला मंडल, जैन युवा मंच तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। सभी ने आगामी 26 जुलाई 2026 (रविवार) प्रातः 8:00 बजे आयोजित होने वाले मंगल कलश स्थापना महोत्सव को ऐतिहासिक, भव्य एवं सफल बनाने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में श्रद्धालुओं को वर्षयोग के अंतर्गत आयोजित होने वाले विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी दी गई तथा अधिकाधिक धर्मप्रेमियों तक निमंत्रण पहुंचाकर उन्हें धर्मलाभ का अवसर प्रदान करने का आग्रह किया गया।

जैन भवन की धर्मसभा में आचार्यों के सान्निध्य में धर्म, साधना और जीवन व्यवस्था पर प्रेरक प्रवचन

29 जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव एवं मंगल कलश स्थापना समारोह होगा आयोजित

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

जैन भवन में आयोजित धर्मसभा का शुभारंभ आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज, आचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज एवं पट्टाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज के चित्रों के अनावरण तथा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य पारसमलझराजेश कुमार पांड्या परिवार (ऊटड़ा वाले) को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में सुनील गदिया, सुशील पाटनी, लूणकरण कासलीवाल सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन कमल बैद ने किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री विजयेशसागर जी महाराज ने बताया कि उनका आज तीसरा उपवास है। उन्होंने आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 33 उपवास एवं संलेखना तथा आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज (दक्षिण) के 13 उपवास एवं संलेखना की महान साधना का स्मरण करते हुए कहा कि समाधि का समय कब आ जाए, इसका किसी को ज्ञान नहीं होता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को निरंतर आत्मचिंतन, परिणामों की शुद्धि और मन की शांति का अभ्यास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीवन में सुख-दुःख आते-जाते रहते हैं, लेकिन जिनके परिणाम समभावयुक्त और शांत रहते हैं, वही वास्तविक साधना के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। ॐ नमः सिद्धेभ्यः का निरंतर स्मरण हमारे विचारों और भावों को पवित्र बनाता है। मुनिश्री ने कहा कि जो भगवान की वाणी को अपने जीवन में धारण करता है, वही सच्चा श्रावक कहलाता है। श्रावक भोजन का सेवन करता है, जबकि आचार्य जिनवाणी का सेवन करते हैं। यदि प्राप्त ज्ञान को व्यवहार में उतार लिया जाए, तो आत्मोन्नति निश्चित है। इस अवसर पर आचार्य 108 श्री विहर्षसागर जी महाराज ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि धर्म ऐसा लड्डू है, जिसे किसी भी ओर से खाओ, वह मीठा ही लगता है। आवश्यकता केवल धर्म रूपी लड्डू बनाना सीखने की है। उन्होंने कहा कि धर्म पालन के लिए सही जानकारी और व्यवस्थित जीवनशैली आवश्यक है। आचार्य श्री ने कहा कि मंदिर जाते समय शुद्ध वस्त्र धारण करें तथा पूजा, दर्शन और मंदिर की मर्यादाओं का विधिपूर्वक पालन करें। यदि धर्म करने के बाद भी जीवन में अशांति बनी रहती है, तो समझना चाहिए कि हमारी धर्म-व्यवस्था में कहीं न कहीं कमी है। व्यवस्था के विपरीत चलने वाला व्यक्ति कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि हमारे विचार सदैव उच्च और परिणाम शुद्ध होने चाहिए। पानी छानकर पीना, शुद्ध भोजन करना तथा जीवन में पवित्रता बनाए रखना आवश्यक है। जैसा पियोगे पानी, वैसी होगी वाणी। जहाँ से जीवन में अच्छी व्यवस्था प्रारंभ होती है, वहीं से कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होता है। वीतरागी के पास वीतराग भाव लेकर जाएँ। यदि कोई व्यक्ति छह माह तक मौन साधना करे, तो उसकी वाणी में भी सिद्धि का विकास होने लगता है। धर्म और गृहस्थ जीवन दोनों को अनुशासित एवं व्यवस्थित ढंग से चलाने पर ही आत्मकल्याण संभव है। प्रचार-प्रसार संयोजक जितेंद्र पाटनी ने बताया कि 29 जुलाई 2026 को गुरु पूर्णिमा महोत्सव एवं मंगल कलश स्थापना समारोह का भव्य आयोजन आर.के. कम्युनिटी सेंटर, किशनगढ़ में दोपहर 12:15 बजे से किया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के सहभागी होने की संभावना है।

सहस्रकूट विज्ञातीर्थ, गुंसी में सिद्धचक्र महामंडल विधान के तीसरे दिन गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी ने 'समर्पण' का दिया संदेश

गुंसी एवं आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्राप्त किया धर्मलाभ

गुंसी (राजस्थान). शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर सहस्रकूट विज्ञातीर्थ, गुंसी में परम पूज्य गणिनी आर्यिका गुरु माँ 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का तीसरा दिन श्रद्धा, भक्ति एवं समर्पण के भावों के साथ संपन्न हुआ। प्रवक्ता प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि प्रातःकाल अभिषेक एवं शांतिधारा के पश्चात विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि सच्ची भक्ति बिना किसी शर्त और अहंकार के समर्पण से ही संभव है। जब तक आत्मा में प्रभु के प्रति निष्कपट समर्पण का भाव जागृत नहीं होता, तब तक धर्म की वास्तविक अनुभूति नहीं हो सकती। प्रभु भक्ति में स्वयं को पूर्णतः समर्पित कर देना ही कर्मों की निर्जरा का सबसे सरल और श्रेष्ठ मार्ग है।

बाकलीवाल परिवार बना मुख्य पुण्यार्जक

विधान के मुख्य पुण्यार्जक नवीन जी एवं श्रीमती कविता जी बाकलीवाल (सपरिवार) ने अत्यंत श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराए। परिवार ने गुरु माँ के श्रीचरणों में अर्घ्य समर्पित कर पूर्ण निष्ठा के साथ जिनभक्ति एवं विधान की पूजा-अर्चना की। उनके समर्पण एवं धर्म प्रभावना की उपस्थित सकल जैन समाज ने मुक्तकंठ से सराहना की।

दिनभर हुए विविध धार्मिक आयोजन

अशोक जैन रावंका ने बताया कि मध्याह्न में पूज्य गुरु माँ का मंगल प्रवचन, श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं अर्घ्य समर्पण का आयोजन हुआ। वहीं ब्रह्मचारिणी रुचि दीदी एवं निशु दीदी ने बताया कि सायंकाल भक्तिमय आरती, पूज्य माताजी के सान्निध्य में शास्त्र स्वाध्याय तथा सांस्कृतिक जिनभक्ति कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। इस पावन आयोजन में गुंसी एवं आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। सभी ने धर्मलाभ प्राप्त कर पूज्य गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी का मंगल आशीर्वाद ग्रहण किया।

विश्व आईवीएफ दिवस

उम्मीद, विज्ञान और बदलती सोच की कहानी

डॉ. सुनील यादव, आईवीएफ विशेषज्ञ एवं स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ, मैटकेयर मैटरनिटी एंड चाइल्ड हॉस्पिटल, वाराणसी

करीब पांच दशक पहले, 25 जुलाई 1978 को इंग्लैंड में जब दुनिया की पहली आईवीएफ शिशु लुईस ब्राउन का जन्म हुआ, तब शायद किसी ने नहीं सोचा था कि यह उपलब्धि एक दिन करोड़ों परिवारों की जिंदगी बदल देगी। भारत ने भी 1986 में डॉ. इंदिरा हिंदुजा के प्रयासों से इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम रखा। आज विश्वभर में एक करोड़ से अधिक बच्चे आईवीएफ तकनीक की मदद से जन्म ले चुके हैं।

बांझपन: एक बढ़ती चिंता

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, आज लगभग हर छह में से एक दंपत्ति जीवन के किसी न किसी समय बांझपन की समस्या का सामना करता है। इसके पीछे कई कारण जिम्मेदार हैं:

देर से विवाह और बढ़ती मातृत्व आयु।
तनावपूर्ण जीवनशैली और मोटापा।
मधुमेह, पीसीओएस और थायरॉयड रोग।
धूम्रपान, शराब और प्रदूषण।
पुरुषों में शुक्राणुओं की गुणवत्ता में कमी (यह ध्यान रखना जरूरी है कि लगभग आधे मामलों में पुरुष संबंधी कारण जिम्मेदार होते हैं)।

विज्ञान की प्रगति

आज का आईवीएफ पहले की तुलना में कहीं अधिक सुरक्षित, सटीक और आरामदायक हो चुका है।

तकनीकी सुधार: नई पीढ़ी की दवाओं, अत्यंत पतली सुइयों और आधुनिक तकनीकों ने उपचार के दौरान होने वाली असुविधा को काफी कम कर दिया है।

व्यक्तिगत उपचार: आईवीएफ अब 'एक जैसा उपचार' नहीं रह गया है। प्रत्येक दंपति की उम्र, हार्मोन स्तर, ओवरी की क्षमता और चिकित्सा इतिहास को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत उपचार योजना बनाई जाती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: एआई अब भ्रूणों के विकास का विश्लेषण कर बेहतर भ्रूण चयन, शुक्राणु मूल्यांकन और उपचार की योजना बनाने में विशेषज्ञों की सहायता कर रहा है।

सफलता दर: बेहतर लैब, टाइम-लैप्स मॉनिटरिंग, विट्रिफिकेशन और आधुनिक प्रोटोकॉल के कारण सफलता दर में निरंतर सुधार हुआ है, साथ ही ओवेरियन हाइपरस्टिमुलेशन सिंड्रोम जैसी जटिलताओं का जोखिम भी काफी कम हुआ है।

सामाजिक दृष्टिकोण और निष्कर्ष: सबसे बड़ी चुनौती तकनीक नहीं, बल्कि समाज की सोच है। बांझपन कोई अभिशाप या सामाजिक कलंक नहीं, बल्कि एक चिकित्सकीय स्थिति है। तकनीकी प्रगति और केंद्रों की उपलब्धता के कारण यह उपचार पहले की तुलना में अधिक सुलभ और किफायती होता जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उम्र के साथ प्रजनन क्षमता स्वाभाविक रूप से कम होती जाती है, इसलिए उपचार में अनावश्यक देरी कई बार सबसे महंगी साबित होती है। विश्व आईवीएफ दिवस हमें विश्वास देता है कि सही समय पर जांच, सही सलाह और आधुनिक विज्ञान की मदद से माता-पिता बनने का सपना साकार हो सकता है।

आईवीएफ अब 'एक जैसा उपचार' नहीं रह गया है। प्रत्येक दंपति की उम्र, हार्मोन स्तर, ओवरी की क्षमता और चिकित्सा इतिहास को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत उपचार योजना बनाई जाती है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए सघन वृक्षारोपण, विद्यार्थियों को गणवेश एवं शिक्षण सामग्री वितरित

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज का 57वाँ अवतरण दिवस सेवा कार्यों के साथ मनाया गया

अजमेर. शाबाश इंडिया। साधना महोदधि तपाचार्य अंतर्मना 108 आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महामुनिराज के 57वें अवतरण दिवस के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन महासमिति, अजमेर संभाग द्वारा ग्राम नरवर स्थित गुडविल स्कूल में सेवा, शिक्षा, संस्कार एवं पर्यावरण संरक्षण को समर्पित विविध जनकल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महासमिति द्वारा वर्षों से गोद लिए गए इस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए अनेक सेवा प्रकल्प समर्पित किए गए। महासमिति के संरक्षक राकेश पालीवाल एवं अध्यक्ष अतुल पाटनी के सहयोग से 100 विद्यार्थियों को गणवेश वितरित

किए गए। हैदराबाद निवासी मनोज चौधरी के सहयोग से उत्तर पुस्तिकाएँ एवं ज्योमेट्री बॉक्स प्रदान किए गए। वहीं शास्त्री नगर (अजमेर) निवासी पुनीत-विनीता लुहाड़िया, गाजियाबाद निवासी सीमा जैन तथा मुंबई निवासी प्रभा जैन के सहयोग से विद्यालय को फर्नीचर उपलब्ध कराया गया। जयपुर निवासी सुनील पाटनी ने दरिया एवं आशीष पांड्या के सहयोग से विद्यालय के सौंदर्यीकरण का कार्य भी संपन्न कराया। महासमिति के महामंत्री एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कमल गंगवाल ने बताया कि आचार्य श्री के अवतरण दिवस को पर्यावरण संरक्षण संकल्प दिवस के रूप में मनाते हुए विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में उत्तमचंद-निर्मला गंगवाल (अजमेर) के सहयोग से सघन वृक्षारोपण किया गया। पौधों की सुरक्षा के लिए ट्री-गार्ड भी लगाए गए। विद्यालय पहुंचने पर विद्यालय प्रशासन ने सभी अतिथियों का ओढ़नी ओढ़ाकर स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती एवं अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन तथा णमोकार महामंत्र के सामूहिक जाप के साथ हुआ। इस अवसर पर महासमिति के अध्यक्ष अतुल पाटनी ने विद्यार्थियों एवं ग्रामीणों को संबोधित करते हुए शिक्षा के साथ संस्कार, सेवा और पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने समाज से ऐसे जनकल्याणकारी कार्यों में निरंतर सहयोग देने का आह्वान भी किया। महासमिति के प्रवक्ता संजय कुमार जैन ने बताया कि कार्यक्रम में संरक्षक राकेश पालीवाल, महामंत्री कमल गंगवाल, उपाध्यक्ष ताराचंद सेठी, व्यवस्थापक मनीष पाटनी, विजय पांड्या, अंकित गंगवाल, रेनू पाटनी, विद्यालय प्रशासन, ग्रामवासी, विद्यार्थी तथा बड़ी संख्या में गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक एवं उपाध्यक्ष ताराचंद सेठी ने सभी सेवा सहयोगियों, भामाशाहों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज के सामूहिक सहयोग से ही शिक्षा, सेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्य निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे।

भारतीय मजदूर संघ ने मनाया स्थापना दिवस, थर्मल कार्यालय पर हुआ ध्वज परिवर्तन

कोटा. शाबाश इंडिया। भारतीय मजदूर संघ की कोटा थर्मल इकाई द्वारा गुरुवार को संगठन का स्थापना दिवस उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर शेड नंबर-4 स्थित भारतीय मजदूर संघ कार्यालय तथा कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन के मुख्य द्वार पर ध्वज परिवर्तन किया गया। कार्यक्रम के दौरान कार्यकताओं को मिठाई वितरित कर स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दी गईं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए इकाई अध्यक्ष वीरेंद्र कश्यप ने भारतीय मजदूर संघ के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए संगठन की गौरवशाली परंपरा और श्रमिक हितों के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। महामंत्री रवि गौतम ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ सदैव श्रमिकों के अधिकारों, सम्मान और कल्याण के लिए संघर्षरत रहा है तथा भविष्य में भी पूरी निष्ठा के साथ श्रमिक हितों की रक्षा के लिए कार्य करता रहेगा। इस अवसर पर सुनील जॉन, भुवनेश मीना, किशनलाल गुर्जर, राजेश कुमावत, राजेंद्र सिंह, बलबीर सैनी, राजीव कुमार और घनश्याम शर्मा सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित सदस्यों ने संगठन की एकजुटता बनाए रखने तथा श्रमिकों के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प लिया। ✍ **आजाद शेरवानी**

निर्मल भावदशा ही जीवन का वास्तविक मांगल्य:युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। मंगल बाहर नहीं, मन में जन्म लेता है। हमारी भावना जैसी होती है, जीवन का वास्तविक स्वरूप भी वैसा ही बनता जाता है। भावना में निर्मलता हो तो विपरीत परिस्थितियों में भी मंगल बना रहता है और भावों में अशुद्धि हो तो अनुकूलता के बीच भी जीवन अशांत रहता है। नवकार महामंत्र मनुष्य की इसी अंतर्भावना को शुद्ध और मंगलमय बनाने की साधना है। यह विचार श्रमण संघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी महाराज ने शांतिभवन में चातुर्मास के प्रारंभ पर नवकार महामंत्र जाप आराधना के दौरान धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि नवकार महामंत्र से परिचय चिरकाल से है, लेकिन परिचय साधना की पूर्णता नहीं है। इसकी सार्थकता तब है, जब आस्था, तन्मयता और समर्पण जीवन की दिशा को प्रभावित करें। अत्यधिक परिचय कई बार महान आध्यात्मिक तत्वों के प्रति अहोभाव को सामान्य बना देता है। इसलिए नवकार महामंत्र केवल जप न रहकर, उसके भीतर प्रतिष्ठित गुणों के प्रति श्रद्धा और आत्मपरिष्कार का माध्यम बने, यही उसकी साधना का प्रयोजन है। युवाचार्यश्री ने कहा कि नवकार महामंत्र की विशिष्टता किसी व्यक्ति-विशेष की आराधना में नहीं,बल्कि गुणों की आराधना में है।अरिहंत, सिद्ध,आचार्य, उपाध्याय और साधु-पंच परमेष्ठी के प्रति नमन वस्तुतः उन गुणों और आध्यात्मिक आदर्शों की वंदना है, जिन्हें साधक अपने जीवन में उतारने का पुरुषार्थ करता है। व्यक्ति-केंद्रित श्रद्धा में राग-द्वेष की संभावना हो सकती है, जबकि गुण-केंद्रित आराधना साधक को व्यक्ति की सीमाओं से ऊपर उठाकर शाश्वत मूल्यों से जोड़ती है। उन्होंने नवकार महामंत्र की पाप-प्रणाशिनी शक्ति को स्पष्ट करते हुए कहा कि क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों तथा मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्तियों से पापकर्मों का बंध होता है। पंच परमेष्ठी के गुणों का भावपूर्वक स्मरण इन प्रवृत्तियों की पकड़ को शिथिल करता है। जिस प्रकार डिटर्जेंट वस्त्र के मैल को ढीला करता है और फिटकरी जल की अशुद्धियों को नीचे बैठा देती है, उसी प्रकार गुणों का नमन और स्मरण अंतःकरण में जमे कषाय-मल को निर्बल करने का सामर्थ्य रखता है।

चकवाड़ा में 26 जुलाई को गणिनी आर्यिका श्री सम्मेदशिखर माताजी ससंघ के चातुर्मास मंगल कलश स्थापना महोत्सव का आयोजन

फागी. शाबाश इंडिया। धर्मपरायण नगरी चकवाड़ा स्थित धर्मगुणामृत ट्रस्ट परिसर में गणाचार्य 108 श्री कुन्थूसागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या गणिनी आर्यिका 105 श्री सम्मेदशिखर माताजी एवं आर्यिका 105 श्री केवलश्री माताजी ससंघ के 42वें पावन चातुर्मास-2026 के उपलक्ष्य में 26 जुलाई को मंगल कलश स्थापना महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। राजस्थान जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने बताया कि आर्यिका संघ अजमेर से दूदू, मोजमाबाद एवं धमाना होते हुए 19 जुलाई को चकवाड़ा ग्राम की सीमा पर पहुंचा, जहां सकल दिगंबर जैन समाज ने बैंड-बाजों के साथ भव्य अगवानी की। श्रद्धालुओं ने पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती कर संघ का स्वागत किया तथा उन्हें वर्धमान निलय में विराजमान कराया। धर्मगुणामृत ट्रस्ट के मुख्य संयोजक अशोक जैन अनोपड़ा, अध्यक्ष विमलकुमार जैन बड़जात्या एवं महामंत्री जयकुमार जैन गंगवाल ने बताया कि ट्रस्ट एवं सकल जैन समाज की ओर से आर्यिका संघ के श्रीचरणों में सामूहिक रूप से श्रीफल अर्पित कर वर्ष 2026 के पावन चातुर्मास का निवेदन किया गया। आर्यिका संघ द्वारा चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान करते ही जयघोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष विनोद कुमार कलवाड़ा एवं प्रचार-प्रसार मंत्री नवीन गंगवाल ने बताया कि 26 जुलाई 2026 (रविवार) सायंकाल धर्मगुणामृत ट्रस्ट, चकवाड़ा में वैदिक एवं जैन मंत्रोच्चार के मध्य हर्षोल्लासपूर्वक पावन चातुर्मास मंगल कलश स्थापना संपन्न होगी। उन्होंने सकल दिगंबर जैन समाज एवं धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं से इस पावन आयोजन में अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में आने वाले सभी श्रद्धालुओं के लिए गुणस्थली में भोजन की व्यवस्था भी की गई है।

राजाबाबू गोधाः मीडिया प्रवक्ता, राजस्थान जैन महासभा

सिद्धचक्र महामंडल विधान में पाप-दहन के 128 अर्घ्य समर्पित

विश्व शांति एवं सुख-समृद्धि की कामना के साथ श्रद्धाभाव से संपन्न हुए धार्मिक अनुष्ठान

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर, डीडवाना रोड, कुचामन सिटी में विश्व शांति, सुख-समृद्धि एवं अमन-चैन की मंगलकामना से आयोजित नौ दिवसीय श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान के अंतर्गत गुरुवार प्रातः भव्य कलशाभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। कलशाभिषेक एवं शांतिधारा का सौभाग्य तेजकुमार-शकुंतला बड़जात्या, पंकज-मंजू बड़जात्या, प्रवीण बड़जात्या परिवार, विमलकुमार-नवीन-पदमा-दर्शन पाटोदी परिवार तथा पदमचंद भरतिया परिवार (सीकर) को प्राप्त हुआ। सभी ने शांतिधारा कर धर्मलाभ अर्जित किया। लालचंद पहाड़िया एवं अमित पाटोदी ने बताया कि अष्टान्हिका पर्व वर्ष में तीन बार–कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मास में मनाया जाता है। इन पावन अवसरों पर नंदीश्वर द्वीप विधान एवं सिद्धचक्र महामंडल विधान का विशेष महत्व माना जाता है। उन्होंने बताया कि आज के विधान पूजन में शांति देवी, पुष्पा अजमेरा, मंजू, संतोष, चंदा देवी काला, कमला देवी, हीरामणी, कुसुम पाटोदी, मैना देवी, सुशीला, सलोचना, सरला, रेखा पहाड़िया, कमला देवी झाझरी, ज्ञानमती, आभा, संतोष, हीरा, विनीता, ममता, तारा देवी पांड्या, मंजू, सुनीता गंगवाल, बेबी कासलीवाल तथा राजकुमारी पाटनी एवं संतोष ठोलिया सहित अनेक श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक पूजन कर पुण्यार्जन किया। सुरेश पांड्या एवं माणकचंद काला ने बताया कि कलशाभिषेक के पश्चात देव-शास्त्र पूजन, पंचमेरु पूजन, नंदीश्वर द्वीप पूजन तथा मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की पूजा-अर्चना संपन्न हुई। इसके उपरांत आयोजित सिद्धचक्र महामंडल विधान में पाप-दहन के 128 अर्घ्य विश्व शांति, सुख-समृद्धि एवं मंगलकामना के साथ श्रद्धापूर्वक समर्पित किए गए। विधान में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त किया। — **सुभाष पहाड़िया**

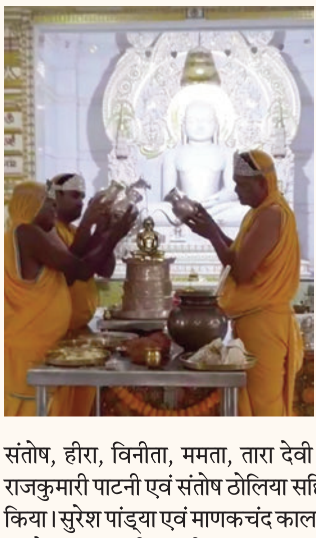

सम्यक दृष्टि का पुण्य ही नियम से मोक्ष का कारण है: मुनि श्रवणसागर जी

श्रमण धारा प्रवचनमाला में सम्यक दर्शन एवं मोक्ष मार्ग पर हुआ प्रेरक प्रवचन

राघौगढ़. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन आचार्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक सुयोग्य शिष्य एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्री श्रवणसागर जी महाराज ने श्रमण धारा प्रवचनमाला के अंतर्गत श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि सम्यक दृष्टि का पुण्य ही नियम से मोक्ष का कारण बनता है। मुनि श्री ने कहा कि जब तक जीव भगवान नहीं बन जाता, तब तक व्यवहार धर्म का त्याग नहीं कर सकता, लेकिन व्यवहार ही हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं है। पुण्य का महत्व तभी तक है, जब तक वह मोक्षमार्ग का साधन बने। शास्त्रों में पुण्य को 'सोने की बेड़ी' कहा गया है। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि पुण्य कब उपादेय है और कब त्याज्य। उन्होंने कहा कि जब तक मोक्ष की तीव्र इच्छा नहीं होगी, तब तक मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। पंच परमेष्ठी का अवलंबन ग्रहण किए बिना तथा संयम और दीक्षा के मार्ग पर चले बिना भगवान पद की प्राप्ति नहीं हो सकती। सम्यक दर्शन की व्याख्या करते हुए मुनि श्री ने कहा कि ब्रह्मांड का जैसा वास्तविक स्वरूप है, उसे उसी रूप में स्वीकार करना ही सम्यक दर्शन है। उन्होंने सरल उदाहरण देते हुए कहा कि माता को माता मानना सम्यक दर्शन है, जबकि मौसी को माता मान लेना मिथ्या दर्शन है। सत्य को यथार्थ रूप में स्वीकार करना ही सम्यक दृष्टि का आधार है। धर्मसभा का संचालन कर रहे विकास कुमार जैन ने बताया कि मुनि श्री श्रवणसागर जी महाराज एवं मुनि श्री ओंकारसागर जी महाराज का इस वर्ष का चातुर्मास धर्मनगरी राघौगढ़ में हो रहा है। गत 20 जुलाई से श्रमण धारा प्रवचनमाला के अंतर्गत प्रतिदिन प्रवचन आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं साधर्मीजन उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

मानवीय मूल्यों की मजबूती के लिए सतत प्रयास आवश्यक : मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

सुमित धाम गोधा स्टेट में भव्य पदार्पण, 26 जुलाई को इंदौर में होगा मंगल प्रवेश

इंदौर. शाबाश इंडिया

राष्ट्रसंत, निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों की मजबूती के लिए निरंतर प्रयास की सबसे अधिक आवश्यकता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो कभी रुकनी नहीं चाहिए। जिस प्रकार सूर्य बिना किसी अपेक्षा के निरंतर प्रकाश देता है, उसी प्रकार यदि हम मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएँगे, तो उसका सकारात्मक प्रतिफल स्वतः प्राप्त होगा। सुमित धाम, गोधा स्टेट में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज प्रत्येक व्यक्ति सम्मानपूर्वक जीवन जीना चाहता है, लेकिन दूसरों का सम्मान होते देख प्रसन्न नहीं होता। इस प्रवृत्ति को बदलने की आवश्यकता है। जो व्यक्ति अच्छे कार्य करता है, समाज में उसका सम्मान स्वतः स्थापित होता है।

मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी को राजकीय अतिथि घोषित

धर्मसभा से पूर्व आयोजित जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम में मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक विजय धुर्रा ने जानकारी दी कि मध्यप्रदेश शासन ने राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज को राजकीय अतिथि घोषित किया है। उन्होंने कहा कि मुनिश्री का चिंतन सदैव राष्ट्र, समाज, भारतीय संस्कृति और संस्कारों के उत्थान के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने बताया कि मुनि श्री का 26 जुलाई को इंदौर में वषायोग (चातुर्मास) के लिए भव्य मंगल प्रवेश होगा। शासन के इस निर्णय से श्रद्धालुओं का उत्साह और अधिक बढ़ गया है। इस अवसर पर मनीष गोधा, अशोक जोशी, आकाश कोयला, नवीन गोधा, हर्ष जैन, धर्मेंद्र जैन, आनंद गोधा सहित चातुर्मास धर्म प्रभावना समिति के सदस्यों ने शासन का आभार व्यक्त किया।

भव्य अगवानी के साथ सुमित धाम गोधा स्टेट पहुंचे मुनि संघ

इससे पूर्व मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ससंघ 18 पिच्छिकाओं के साथ सेटेलाइट नगर से मंगल विहार करते हुए इंडस्ट्रीज एरिया मार्ग से सुमित धाम, गोधा स्टेट पहुंचे। मार्ग में हजारों श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा एवं जयघोष के साथ उनका भव्य स्वागत किया। गोधा स्टेट में सपना-मनीष गोधा परिवार ने श्रीफल अर्पित कर पाद प्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त किया तथा मंगल प्रवेश कराया।

'मेरे बस की बात नहीं' शब्द का करें त्याग

धर्मसभा में मुनिश्री ने श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि वे अपने जीवन से ''मेरे बस की बात नहीं'' जैसे नकारात्मक शब्दों का त्याग करें। उन्होंने कहा कि यदि इंदौर का प्रत्येक व्यक्ति केवल इस एक वाक्य को छोड़ दे, तो पूरे चातुर्मास का वातावरण बदल जाएगा और प्रत्येक घर में शुभता एवं मंगल का संचार होगा। उन्होंने कहा कि जीवन में किसी भी कार्य को असंभव मानने के बजाय सकारात्मक भाव रखें। यदि गुरु के मुख से कोई प्रेरणा या आदेश निकले, तो उस पर संदेह या बहस करने के बजाय श्रद्धा के साथ उसे स्वीकार करना चाहिए।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट-गाइड स्थानीय संघ बागीदौरा का वार्षिक अधिवेशन संपन्न

स्काउटिंग के माध्यम से सेवा, अनुशासन और चरित्र निर्माण का दिया संदेश

टांडी नानी. शाबाश इंडिया

राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड, स्थानीय संघ बागीदौरा के तत्वावधान में स्काउटर-गाइडर संगोष्ठी एवं स्थानीय संघ का वार्षिक अधिवेशन पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, टांडी नानी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपप्रधान हरीशचंद्र उपाध्याय के मुख्य आतिथ्य, केशव गरासिया की अध्यक्षता तथा प्रधानाचार्य बीनू परमार, अश्विनी कुमार जोशी एवं सुरेशचंद्र गांधी के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत स्काउट प्रार्थना ''दया कर दान भक्ति'' से हुई। इसके पश्चात अतिथियों का स्कार्फ पहनाकर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। प्रधानाचार्य बीनू परमार ने स्वागत उद्बोधन देते हुए स्काउटिंग के महत्व पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में इसकी भूमिका को रेखांकित किया। सहसचिव सुरेशचंद्र गांधी ने पिछली संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जबकि कोषाध्यक्ष नरेंद्र कुमार जोशी ने वार्षिक आय-व्यय तथा आगामी वर्ष के प्रस्तावित बजट को सदन के समक्ष रखा। मुख्य अतिथि हरीशचंद्र उपाध्याय ने कहा कि स्काउटिंग बच्चों में सेवा, चरित्र निर्माण, स्वास्थ्य, कौशल और अनुशासन जैसे गुणों का विकास करती है। यह जीवन जीने की एक प्रभावी कला है, जिससे विद्यार्थियों में राष्ट्रसेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। अध्यक्ष केशव गरासिया ने कहा कि विद्यालयों में स्काउटिंग गतिविधियों से विद्यार्थियों में सेवा, सहयोग और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। उन्होंने अधिकाधिक विद्यार्थियों को स्काउटिंग से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि अश्विनी कुमार जोशी ने कहा कि स्काउटिंग बच्चों में अनुशासन, शिष्टाचार, सहयोग, आत्मनिर्भरता एवं उत्तम आचरण का निर्माण करती है। इसलिए प्रत्येक विद्यालय में विद्यार्थियों को स्काउटिंग से जोड़ना समय की आवश्यकता है। संगोष्ठी एवं अधिवेशन के उपरांत विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। साथ ही आगामी अगस्त माह में आयोजित होने वाले जिला अधिवेशन को सफल बनाने के लिए सभी ने पूर्ण सहयोग का संकल्प लिया।

सेठी कॉलोनी जैन मंदिर में श्री 1008 इन्द्रध्वज महामंडल विधान में गूंजे जयकारे

विधान पूजा से अनंत कर्मों की निर्जरा होती है : गणिनी आर्यिका प्रमुख श्री जिनदेवी माताजी

जयपुर. शाबाश इंडिया

सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित श्री 1008 इन्द्रध्वज (नंदीश्वर) महामंडल विधान श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ जारी है। विधान के अंतर्गत आयोजित धर्मसभा में गणिनी आर्यिका प्रमुख 105 श्री जिनदेवी माताजी ने श्रद्धालुओं को धर्मोपदेश प्रदान करते हुए कहा कि विधान पूजा से अनंत कर्मों की निर्जरा होती है तथा आत्मा पुण्य का संचय कर मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होती है। पूज्य माताजी ने इन्द्रध्वज विधान की महिमा बताते हुए कहा कि यह विधान देवों द्वारा किया जाने वाला अत्यंत पुण्यदायक विधान है। मध्यलोक में स्थित 458 अकृत्रिम जिनालयों में इन्द्रगण भगवान की पूजा-अर्चना कर ध्वजा अर्पित करते हैं। इसी कारण इसे इन्द्रध्वज विधान कहा जाता है। यह तेरह द्वीप विधान के नाम से भी प्रसिद्ध है। जो श्रद्धालु इस विधान को निष्कपट भक्ति एवं श्रद्धा के साथ करता है, वह अनंत कर्मों की निर्जरा कर अपार पुण्य का अर्जन करता है। मंदिर समिति के अध्यक्ष दीनदयाल पाटनी, महामंत्री धर्मीचंद कासलीवाल एवं कोषाध्यक्ष राकेश मुशर्रफ ने बताया कि सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित श्री 1008 इन्द्रध्वज महामंडल विधान में दूर-दूर से श्रद्धालु दर्शन एवं पूजन के लिए पहुंच रहे हैं। विधान में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं सहभागी होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। परम पूज्य आचार्य रत्न बाहुबली महाराज की पट्टशिष्या गणिनी आर्यिका प्रमुख श्री जिनदेवी माताजी के सानिध्य में पूरा वातावरण भक्तिमय बना हुआ है। राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि गुरुवार को भगवान महावीर के अभिषेक के पश्चात महाशांतिधारा का पुण्यार्जन सुनील-कनिका सेठी, सिद्धार्थ एवं दिव्यांश सेठी परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं पूज्य माताजी के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सुरेंद्र-नीरू रारा परिवार ने प्राप्त किया। विधान के दौरान श्रद्धालुओं ने भक्ति एवं उल्लास के साथ अष्टद्रव्य अर्घ्य समर्पित किए। समुच्चय महाअर्घ्य के पश्चात भव्य महाआरती संपन्न हुई। सायंकाल 7 बजे महाआरती का सौभाग्य धर्मीचंद-मुन्नी देवी कासलीवाल परिवार को प्राप्त हुआ। विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि श्री 1008 इन्द्रध्वज महामंडल विधान प्रतिदिन प्रातः 6:00 बजे से 11:00 बजे तक आयोजित किया जा रहा है, जिसमें श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पर्यावरण संरक्षण हेतु सघन वृक्षारोपण, विद्यार्थियों के लिए सेवा कार्य

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज का 57वाँ अवतरण दिवस हर्षोल्लास से मनाया

अजमेर. शाबाश इंडिया। साधना महोदधि तपाचार्य अंतर्मना 108 आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महामुनिराज के 57वें अवतरण दिवस के पावन अवसर पर श्री दिगंबर जैन महासमिति, अजमेर संभाग द्वारा ग्राम नरवर स्थित गुडविल स्कूल में सेवा, शिक्षा, संस्कार एवं पर्यावरण संरक्षण को समर्पित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महासमिति के संभाग अध्यक्ष अतुल पाटनी एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य तथा संभागीय महामंत्री कमल गंगवाल ने बताया कि महासमिति द्वारा वर्षों से गोद लिए गए इस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए अनेक जनसेवी प्रकल्प संचालित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में महासमिति के संरक्षक राकेश पालीवाल एवं अध्यक्ष अतुल पाटनी के सहयोग से 100 विद्यार्थियों को गणवेश वितरित किए गए। उन्होंने बताया कि हैदराबाद निवासी मनोज चौधरी के सहयोग से उत्तर-पुस्तिकाएँ एवं ज्योमेट्री बॉक्स वितरित किए गए। वहीं पुनीत-विनीता लुहाड़िया (अजमेर), सीमा जैन (गाजियाबाद) तथा प्रभा जैन (मुंबई) के सहयोग से विद्यालय के लिए फर्नीचर उपलब्ध कराया गया। इसके अलावा सुनील पाटनी एवं आशीष पांड्या (जयपुर) के सहयोग से विद्यालय का सौंदर्यीकरण कराया गया। महामंत्री कमल गंगवाल ने बताया कि आचार्य श्री के अवतरण दिवस को पर्यावरण संरक्षण संकल्प दिवस के रूप में मनाते हुए विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण किया गया। पौधों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ट्री गार्ड भी लगाए गए। विद्यालय पहुंचने पर विद्यालय प्रशासन ने सभी अतिथियों का ओढ़नी ओढ़ाकर एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती एवं अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर तथा सामूहिक णमोकार महामंत्र के जाप के साथ हुआ। इस अवसर पर अध्यक्ष अतुल पाटनी ने विद्यार्थियों एवं ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ संस्कार, सेवा और पर्यावरण संरक्षण को जीवन का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। उन्होंने समाज से ऐसे जनकल्याणकारी कार्यों में निरंतर सहयोग करने का आह्वान किया।

जयपुर के समाजसेवी आलोक-प्रमिला शाह ने सम्मेद शिखरजी में आदिवासियों को कराया भोजन, वितरित किए वस्त्र

सम्मेद शिखरजी (झारखंड)/जयपुर। जैन धर्म के सर्वोच्च शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखरजी (मधुबन, झारखंड) में अष्टान्हिका महापर्व एवं भगवान नेमिनाथ के मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर जयपुर के समाजसेवी आलोक शाह एवं प्रमिला शाह द्वारा आदिवासी परिवारों को भोजन कराया गया तथा वस्त्र वितरित किए गए। यह सेवा कार्य बीसपंथी कोठी परिसर में आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में आदिवासी भाई-बहनों ने सहभागिता की। आदिनाथ महिला मंडल की धर्म एवं प्रचार मंत्री अनिता बड़जात्या ने बताया कि जयपुर से एक धार्मिक यात्रा दल गुणायतन, सम्मेद शिखरजी में परम पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान में भाग लेने पहुंचा है। इसी यात्रा दल के संघपति आलोक-प्रमिला शाह के नेतृत्व में यह सेवा कार्य संपन्न किया गया। इस अवसर पर यात्रा दल के सम्माननीय सदस्य अनिल जैन गदिया (बयाना वाले, जयपुर) का भी अभिनंदन किया गया।

उन्होंने हाल ही में कैलाश मानसरोवर की सातवीं यात्रा पूर्ण करने के बाद सम्मेद शिखरजी पहुंचकर परम पूज्य मुनि श्री आदर्शसागर जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने उनका स्वागत एवं सम्मान किया। यात्रा दल में लता सोगानी, भावना झाझरी, नीलम ठोलिया, प्रीति छाबड़ा, प्रमिला शाह, अनिता बड़जात्या, उदयभान जैन, आलोक शाह तथा अनिल जैन गदिया सहित अनेक श्रद्धालु शामिल हैं। आयोजकों ने बताया कि नौ दिवसीय अष्टान्हिका महापर्व का आयोजन 29 जुलाई तक चलेगा। महापर्व के दौरान सिद्धों की आराधना, श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान सहित विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हो रहे हैं। 24 जुलाई को विधान में 64 अर्घ्य समर्पित किए जाएंगे। **प्रेषक : उदयभान जैन, जयपुर**

परमात्मा को पाना है तो सबसे पहले भजन करें : आचार्य रामदयालजी महाराज

सुख में इतराना नहीं और दु:ख में घबराना नहीं चाहिए

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। अंतरराष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय, शाहपुरा के पीठाधीश्वर एवं जगद्गुरु आचार्य स्वामी श्री रामदयालजी महाराज ने कहा कि यदि परमात्मा की प्राप्ति करनी है तो जीवन के सभी कार्यों से पहले भजन को प्राथमिकता देनी चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है कि करोड़ों काम छोड़कर भजन करो, लेकिन आज मनुष्य भजन छोड़कर करोड़ों कामों में उलझा हुआ है। यही उसका दुर्भाग्य और मानसिक दुर्बलता है। माणिक्यनगर स्थित रामद्वारा धाम में आयोजित विश्व शांति कल्याण चातुर्मास के अंतर्गत दैनिक सत्संग में गुरुवार को श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि लोग सोचते हैं कि समय मिलने पर भजन करेंगे, जबकि सबसे पहला कार्य ही भजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वामी रामचरण महाराज ने भजन के लिए कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं किया है। जब भी श्रद्धा से भजन किया जाए, वह पुण्यदायक होता है। भजन के लिए समय नहीं, बल्कि समझ और श्रद्धा की आवश्यकता होती है। आचार्यश्री ने कहा कि मानव शरीर परमात्मा की कृपा, श्रेष्ठ संस्कार कुल की कृपा और सत्संग व भजन की प्रेरणा सद्गुरु की कृपा से प्राप्त होती है। राम-नाम के सुमिरन से जन्म-मरण का चक्र समाप्त होता है। जिस प्रकार भोजन रुचि और आनंद के साथ किया जाता है, उसी प्रकार भजन भी प्रेम, श्रद्धा और आनंद के साथ करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जन्म के साथ ही मृत्यु निश्चित हो जाती है। इसलिए जीवन में न तो सुख स्थायी है और न ही दुःख। सुख मिलने पर अहंकार नहीं करना चाहिए और दुःख आने पर निराश या घबराना नहीं चाहिए।

संस्कार बदलेंगे तो बदलेगा जीवन

सम्यक दृष्टि ही आत्मकल्याण और मोक्ष का प्रथम द्वार : निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर जी महाराज

कोटा. शाबाश इंडिया। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन पुण्योदय अतिशय क्षेत्र, नसियांजी, दादाबाड़ी में निर्यापक श्रमण मुनि 108 श्री योगसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित अष्टाह्निका महापर्व एवं नौ दिवसीय श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान महोत्सव के तृतीय दिवस श्रद्धा, भक्ति, आराधना और आध्यात्मिक साधना का अनुपम संगम देखने को मिला। प्रातःकाल से ही मंदिर परिसर णमोकार महामंत्र, भक्तिभाव और जिनवाणी की मंगलध्वनि से गुंजायमान रहा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने विधान, अभिषेक, पूजन एवं अर्घ्य समर्पित कर आत्मशुद्धि, विश्वशांति तथा समस्त प्राणियों के मंगल की कामना की। श्री आदिनाथ दिगंबर जैन पुण्योदय अतिशय क्षेत्र के निदेशक हुकम जैन 'काका' ने बताया कि प्रातःकाल मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान के साथ श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न हुआ, जिसमें महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने श्रद्धा और भक्ति के साथ सहभागिता कर धर्मलाभ एवं आत्मकल्याण का पुण्य अर्जित किया। विधान समिति के अध्यक्ष जंबू जैन सर्राफ ने बताया कि धर्मसभा को संबोधित करते हुए निर्यापक श्रमण मुनि 108 श्री योगसागर जी महाराज ने संस्कार, सम्यक दर्शन और आत्मकल्याण पर आधारित प्रेरक प्रवचन दिए। उन्होंने कहा कि जीव अपने कर्मों और संस्कारों के कारण अनादिकाल से जन्म-मरण के चक्र में भटक रहा है। यदि मनुष्य आत्मनिरीक्षण करते हुए सम्यक दृष्टि, सदाचार और धर्ममय जीवन को अपनाता है, तो उसके लिए मोक्षमार्ग स्वतः प्रशस्त हो जाता है। मुनिश्री ने कहा कि संस्कार बदलेंगे तो जीवन बदलेगा। जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का आधार सम्यक दृष्टि और शुद्ध आचरण है। जब व्यक्ति अपने भीतर के दोषों को पहचानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करता है, तभी आत्मकल्याण की दिशा में वास्तविक प्रगति संभव होती है।

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी-परतापुर ने एसबीआई स्टाफ को वितरित किए जीवन रक्षक किट

नवनियुक्त शाखा प्रबंधक रोहित कलाउवा का किया सम्मान

गढ़ी-परतापुर. शाबाश इंडिया। महावीर इंटरनेशनल गढ़ी-परतापुर की ओर से हृदयाघात जैसी आपात स्थिति में रोगी को प्राथमिक राहत उपलब्ध कराने तथा उसे समय पर चिकित्सालय पहुंचाने के उद्देश्य से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), परतापुर-गढ़ी शाखा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जीवन रक्षक टैबलेट किट वितरित किए गए। इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल के इंटरनेशनल डायरेक्टर (नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल) अजीत कोठिया ने बैंक के नवनियुक्त शाखा प्रबंधक रोहित कलाउवा का उपरना ओढ़ाकर सम्मान किया तथा उनके सफल एवं सुखद कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने संस्था की मुखपत्रिका 'महावीर प्रवाह' की प्रति भी भेंट की। वहीं एसबीआई पेंशनर्स एसोसिएशन, बांसवाड़ा-डूंगरपुर यूनिट की ओर से शाखा प्रबंधक को पेंशनर्स समाज की त्रैमासिक पत्रिका भी भेंट की गई। कार्यक्रम के दौरान विशाल प्रसाद, संदीप यादव, प्रेमानंद प्रधान, एलेन के लाल, राहुल जोशी, अमित श्रीमाली, दीपक पटेल, प्रकाश हरिजन, अब्दुल हमीद, शमशेर सिंह, कमलजीत यादव, सुरेश समोटा, राजेंद्र चंदेल, राजेंद्र महला, विशाल हरिजन, सतीश कटारा, कालूराम, भावेश पुरोहित, चिंतन पंचाल, पीयूष पंचाल तथा दीपिका माली सहित बैंक स्टाफ को जीवन रक्षक टैबलेट किट वितरित कर उनके उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामनाएं की गईं। नवनियुक्त शाखा प्रबंधक रोहित कलाउवा ने महावीर इंटरनेशनल का आभार व्यक्त करते हुए संस्था द्वारा किए जा रहे पीड़ित मानवता सेवा कार्यों की सराहना की। उन्होंने आश्वासन दिया कि भविष्य में ऐसे जनहितकारी एवं सेवा कार्यों में एसबीआई भी हरसंभव सहयोग प्रदान करेगा।

लोगों के दिलों के ताने-बाने जोड़ने का प्रयास होगा भीलवाड़ा चातुर्मास : राष्ट्रसंत पुलकसागरजी महाराज

चातुर्मास में संस्कृति, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के हित पर होगा मंथन

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। मनोज्ञाचार्य राष्ट्रसंत पुलकसागरजी महाराज ने कहा कि जब तक व्यक्ति स्वयं बदलने का संकल्प नहीं लेता, तब तक उसे भगवान भी नहीं बदल सकते। चातुर्मास का उद्देश्य लोगों के भीतर आत्मपरिवर्तन की भावना जागृत करना है। उन्होंने कहा कि वस्त्रनगरी भीलवाड़ा में आयोजित होने वाला चातुर्मास केवल धार्मिक आयोजन नहीं होगा, बल्कि लोगों के दिलों के ताने-बाने को जोड़ने का प्रयास भी करेगा। चित्तौड़गढ़ रोड स्थित मंडपिया आरएसडब्ल्यूएम परिसर में श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति द्वारा आयोजित पत्रकार वार्ता में उन्होंने कहा कि भीलवाड़ा की जनता वर्षों से उनके चातुर्मास की प्रतीक्षा कर रही थी। यहां का साम्प्रदायिक सौहार्द, मानवीयता और श्रोताओं की ग्रहणशीलता उन्हें विशेष रूप से आकर्षित करती है। उन्होंने कहा कि अच्छे श्रोता ही अच्छे वक्ता का निर्माण करते हैं। करीब 11 वर्षों के अंतराल के बाद तीसरी बार भीलवाड़ा पहुंच रहे राष्ट्रसंत ने कहा कि चातुर्मास के दौरान राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के हित से जुड़े विषयों पर व्यापक चिंतन होगा। भारतीय संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों और राष्ट्रीय पुनर्जागरण पर विशेष मंथन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि व्यक्ति से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व का निर्माण होता है, इसलिए राष्ट्र रूपी वृक्ष को सशक्त बनाने के लिए परिवार रूपी जड़ों को मजबूत करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि 25 जुलाई को चातुर्मास का मंगल प्रवेश, 1 अगस्त को चित्रकूटधाम में गुरु गुणानुवाद कार्यक्रम तथा 2 अगस्त को मंगल कलश स्थापना होगी। इन आयोजनों में देशभर से हजारों श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। वहीं 15 से 30 अगस्त तक चित्रकूटधाम में ज्ञान गंगा महोत्सव आयोजित किया जाएगा। नियमित चातुर्मासिक प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 10:00 बजे तक शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में होंगे।

अतिशय क्षेत्र कारीटोरन जी में सिद्धचक्र महामंडल विधान का समापन

विधान के दौरान सफेद सर्प के दिखाई देने को श्रद्धालुओं ने अतिशय एवं रक्षक देव का स्वरूप माना

घुवारा/ललितपुर. शाबाश इंडिया। उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले स्थित जैन धर्म के प्राचीन एवं प्रसिद्ध श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ अतिशय क्षेत्र कारीटोरन जी में समाधि साधक, राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज की परम प्रभावक शिष्या भारत गौरव गणिनी गुरु मां बिन्धश्री माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान का गुरुवार को श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ समापन हुआ। ज्योतिभूषण प्रतिष्ठाचार्य पंडित महेश कुमार (डीमापुर) के कुशल निर्देशन में 16 से 23 जुलाई तक आयोजित नौ दिवसीय विधान के अंतिम दिन प्रातः हवन एवं पूर्णाहुति से पूर्व गणिनी गुरु मां के मुखारविंद से मंत्रोच्चारण के बीच इंद्र-इंद्राणियों द्वारा अंतिम अर्घ्य समर्पित किए गए। क्षेत्र के आसपास के अनेक गांवों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने सिद्ध परमेष्ठियों की आराधना कर आत्मकल्याण एवं कर्म निर्जरा की मंगल भावना के साथ विधान में सहभागिता की। विधान के दौरान भगवान के समवशरण के समीप एक अत्यंत पतला सफेद सर्प दिखाई दिया। वहां उपस्थित अनेक श्रद्धालुओं ने इसे रक्षक देव का स्वरूप मानते हुए श्रद्धा व्यक्त की। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कुछ समय तक सर्प वहीं दिखाई देता रहा, जिसके दर्शन को श्रद्धालुओं ने क्षेत्र का आध्यात्मिक अतिशय मानते हुए भक्ति भाव प्रकट किया। (यह श्रद्धालुओं की आस्था एवं मान्यता है।) विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए ज्योतिभूषण पंडित महेश कुमार (डीमापुर) ने क्षेत्र में प्रस्तावित गुरुकुल सहित अन्य विकास योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि गणिनी गुरु मां के मंगल आशीर्वाद से सभी योजनाएं शीघ्र साकार होंगी तथा वर्ष 2027 का चातुर्मास भी अतिशय क्षेत्र कारीटोरन जी में आयोजित हो सकेगा।

30-31 जुलाई को जयपुर में आयोजित होगी बंधन ग्रुप की राखी एवं लाइफस्टाइल एग्जीबिशन

विधायक कालीचरण सराफ ने किया पोस्टर का विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। बंधन एक पहल सोसायटी के तत्वावधान में 30 एवं 31 जुलाई, 2026 को मालवीय नगर, सेक्टर-3 स्थित शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर परिसर में बंधन ग्रुप की राखी एवं लाइफस्टाइल एग्जीबिशन का आयोजन किया जाएगा। एग्जीबिशन के पोस्टर का विमोचन 23 जुलाई, 2026 को मालवीय नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक कालीचरण सराफ ने किया। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता नरेंद्र जैन, अशोक कुमार जैन तथा बंधन एग्जीबिशन की संयोजक शैफाली जैन, मेघा जैन एवं रुचि जैन उपस्थित रहीं। आयोजकों ने बताया कि दो दिवसीय एग्जीबिशन में विभिन्न शहरों से आए प्रदर्शक अपने आकर्षक एवं नवीनतम उत्पादों का प्रदर्शन करेंगे। आगंतुकों को राखियों, वेडिंग कलेक्शन, फैशन एवं लाइफस्टाइल उत्पादों, होम डेकोर, महिलाओं की उपयोगी वस्तुओं तथा विशेष अवसरों के लिए गिफ्ट हैम्पर्स सहित अनेक उत्पाद एक ही स्थान पर उपलब्ध होंगे। आयोजकों के अनुसार यह एग्जीबिशन खरीदारी के साथ-साथ उत्सवपूर्ण माहौल का आनंद लेने का भी विशेष अवसर होगा। उन्होंने शहरवासियों से बड़ी संख्या में पहुंचकर इस अनूठी शॉपिंग एग्जीबिशन का लाभ उठाने का आग्रह किया।

देव, शास्त्र और गुरु में दृढ़ आस्था होगी तभी होगा कल्याण : निर्यापक मुनि श्री विलोकसागर जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया। दुर्गापुरा स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर, चंद्रप्रभु जी में गुरुवार को आयोजित धर्मसभा में निर्यापक मुनि 108 श्री विलोकसागर जी महाराज ने कहा कि देव, शास्त्र और गुरु में दृढ़ आस्था ही आत्मकल्याण का आधार है। केवल बाहरी पूजा-अर्चना से नहीं, बल्कि श्रद्धा और विश्वास के साथ धर्म का पालन करने से ही जीवन सार्थक होता है। मुनिश्री ने कहा कि भगवान की प्रतिमा पाषाण की होती है, किंतु संस्कार एवं प्रतिष्ठा के पश्चात वह पूजनीय बन जाती है। जैन धर्म में पत्थर की नहीं, बल्कि भगवान के गुणों की पूजा की जाती है। यदि देव, शास्त्र और गुरु में दृढ़ आस्था होगी, तभी कल्याण संभव है। बिना श्रद्धा के मूर्तिपूजा, गुरु वंदना या जिनवाणी का अध्ययन करने से अपेक्षित आध्यात्मिक लाभ प्राप्त नहीं होता। उन्होंने कहा कि जैन धर्म कर्मप्रधान धर्म है। मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। भगवान किसी के सुख-दुःख के कारण नहीं होते, बल्कि प्रत्येक जीव अपने कर्मों के अनुसार ही सुख-दुःख का अनुभव करता है। मुनिश्री ने कहा कि मंदिर और भगवान के दर्शन तो सहज मिल सकते हैं, लेकिन सच्ची

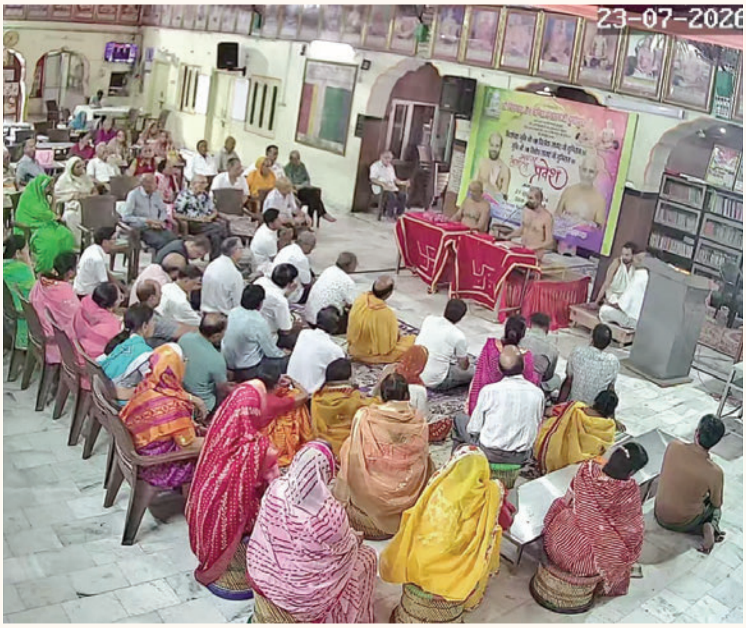

आस्था दुर्लभ होती है। उन्होंने मिथ्यादृष्टि मारीचि का उदाहरण देते हुए कहा कि जब तक उसने जिनधर्म पर विश्वास नहीं किया, तब तक उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई। हिंसा का त्याग कर सत्य को स्वीकार करने के बाद ही उसके जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन आया। उन्होंने राजा श्रेणिक का उदाहरण देते हुए बताया कि प्रारंभ में उन्हें जैन धर्म पर विश्वास नहीं था, जिसके कारण उन्होंने सातवें नरक की आयु का बंध किया। बाद में रानी चेलना के समझाने पर जैन धर्म में उनकी आस्था जागृत हुई, जिससे उनके कर्मबंध में परिवर्तन आया। मुनिश्री ने श्रद्धालुओं का आह्वान करते हुए कहा कि धर्म तभी फलदायी होता है, जब उसमें आस्था और विश्वास जुड़ा हो। केवल औपचारिक रूप से किए गए धार्मिक कर्मकांड आत्मकल्याण का माध्यम नहीं बन सकते। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाशचंद चांदवाड़ एवं मंत्री राजेंद्र काला ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ महावीर प्रसाद बाकलीवाल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। दीप प्रज्वलन मीरा मार्ग जैन मंदिर के अध्यक्ष सुशील पहाड़िया एवं नेमीचंद सोनी ने किया, जबकि विमलकुमार गंगवाल सहयोगी रहे। इस अवसर पर चंदा सेठी एवं सुशीला कासलीवाल ने मुनिश्री को जिनवाणी भेंट की। कार्यक्रम का संचालन अजित शास्त्री ने किया। सायंकाल मुनिश्री ने श्रद्धालुओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा अंत में गुरुवर की आरती संपन्न हुई।

बैंक ऑफ बड़ौदा अंचल कार्यालय में नराकास की 29वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति एवं गतिविधियों की हुई व्यापक समीक्षा

वाराणसी. शाबाश इंडिया। बैंक ऑफ बड़ौदा अंचल कार्यालय, वाराणसी के संयोजन में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकासझबैंक एवं बीमा), वाराणसी की 29वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख मिथलेश कुमार की अध्यक्षता तथा डॉ. छबिल कुमार मेहर, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के विशेष आतिथ्य में आयोजित की गई। बैठक के प्रारंभ में उप महाप्रबंधक (अनुपालन एवं आश्वासन) मनोज कुमार बक्शी ने नराकास (बैंक एवं बीमा), वाराणसी के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इसके पश्चात मुख्य अतिथि, अध्यक्ष एवं अन्य अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नराकास की छमाही पत्रिका ''काशी वाणी'' के 28वें अंक तथा नराकास (बैंक एवं बीमा), वाराणसी के मासिक ई-न्यूजलेटर ''साहित्य श्रृंखला'' का मंचासीन अतिथियों द्वारा ई-विमोचन किया गया। बैठक में सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन, प्रगति एवं विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा की गई। साथ ही राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन एवं भविष्य की कार्ययोजना पर भी विस्तार से चर्चा की गई। बैठक के दौरान डॉ. पुनीत कुमार मिश्र, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति), बैंक ऑफ बड़ौदा प्रधान कार्यालय, ने वेब माध्यम से जुड़कर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया तथा राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सुझाव दिए।

इनर व्हील क्लब वाराणसी 'मित्रम' का पदग्रहण समारोह संपन्न

रोटी बैंक को खाद्य सामग्री, विद्यार्थियों को स्टेशनरी एवं पॉलीथिन मुक्त भारत के लिए जूट के थैले वितरित

वाराणसी. शाबाश इंडिया। इनर व्हील क्लब वाराणसी 'मित्रम' का पदग्रहण समारोह ककरमत्ता स्थित एक होटल में उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डिस्ट्रिक्ट ट्रेजरार डॉ. अनुराधा भाटिया तथा क्लब की संस्थापिका पीएटी/पीडीसी डॉ. अंजलि अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर किया। समारोह के दौरान सत्र 2026-27 के लिए नई कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। नई कार्यकारिणी में डॉ. शालिनी सिंह ने अध्यक्ष, सतरूपा ने उपाध्यक्ष, वंदना श्रीवास्तव ने सचिव, डॉ. ममता तिवारी ने कोषाध्यक्ष, गीता अग्रवाल ने आईएसओ तथा डॉ. सरोज राय ने संपादक (एडिटर) का पदभार ग्रहण किया। अपने संबोधन में नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. शालिनी सिंह ने सेवा, सामाजिक सरोकार और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में क्लब की गतिविधियों को और अधिक विस्तार देने का संकल्प व्यक्त किया। समारोह के अवसर पर विभिन्न सामाजिक सेवा प्रकल्प भी संचालित किए गए। रोटी बैंक को खाद्य सामग्री प्रदान की गई, विद्यार्थियों को स्टेशनरी सामग्री वितरित की गई तथा ''पॉलीथिन मुक्त भारत'' अभियान के अंतर्गत जूट के थैले वितरित किए गए। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधों का भी वितरण किया गया। कार्यक्रम में श्रेयसी मिश्रा ने गणेश वंदना की मनोहारी प्रस्तुति दी। समारोह का संचालन डॉ. अंजलि अग्रवाल ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन सतरूपा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर निशा, श्वेता, शाइस्ता, मंजू केशरी, उमा केशरी सहित क्लब की अनेक सदस्याएं उपस्थित रहीं। – **संतोष कुमार सिंह**

स्काउटिंग केवल प्रशिक्षण नहीं, राष्ट्र निर्माण की आधारशिला : भीनमाल में स्काउट-गाइड का वार्षिक अधिवेशन संपन्न

भीनमाल. शाबाश इंडिया

राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड, स्थानीय संघ भीनमाल का वार्षिक अधिवेशन एवं अभिनंदन समारोह दासपा रोड स्थित सैन समाज मंदिर परिसर में उत्साह एवं गरिमापूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसमें अतिथियों, संस्था प्रधानों तथा स्काउटर-गाइडरों ने सहभागिता की। स्थानीय संघ के सचिव डॉ. घनश्याम कुमार व्यास ने अतिथियों का स्वागत करते हुए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि स्काउटिंग अनुशासन, सेवा, नेतृत्व क्षमता और व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम है, जो विद्यार्थियों में जिम्मेदारी और सामाजिक सरोकार की भावना विकसित करती है। मुख्य मार्गदर्शक एवं सीओ (स्काउट)

सवाई सिंह राठौड़ ने स्काउटिंग को समाज को प्रकाशमान करने वाला दीपक बताते हुए कहा कि यह केवल प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने शिक्षकों से अधिकाधिक विद्यार्थियों को स्काउट-गाइड गतिविधियों से जोड़ने का आह्वान किया। अध्यक्षता करते हुए शांतिलाल जीनगर ने कहा कि स्काउटिंग विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सेवा भावना और राष्ट्रीय एकता का विकास करती है। उन्होंने इसे चरित्र निर्माण का प्रभावी माध्यम बताते हुए इसके व्यापक विस्तार पर बल दिया। इस अवसर पर नेमलाल, दिनेश कुमार जालोरी, दिनेश दवे, महेंद्र शर्मा एवं राजेंद्र कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए और स्काउटिंग गतिविधियों को और अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया। अधिवेशन में संगठन की मजबूती, सदस्यता विस्तार तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना से संबंधित विभिन्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए। अंत में स्थानीय संघ सचिव डॉ. घनश्याम कुमार व्यास ने सभी अतिथियों, स्काउटर-गाइडरों एवं उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया। – **मुकेश सोलंकी**

महंत भरत मुनि जी ने कथा की चढ़ावा राशि गौसेवा को समर्पित की

शिव नंदीशाला को 21 हजार रुपए का सहयोग, सेवा और गौ संरक्षण का दिया प्रेरक संदेश

ऐलनाबाद. शाबाश इंडिया। पंचदेव मंदिर, ऐलनाबाद के पूज्य श्री श्री 108 महंत भरत मुनि जी उदासीन ने सेवा, परोपकार एवं गौ संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए श्रीमद्भागवत कथा में प्राप्त 21,000 रुपए की चढ़ावा राशि शिव नंदीशाला, ऐलनाबाद को समर्पित कर दी। महंत भरत मुनि जी का कहना है कि धार्मिक आयोजनों का उद्देश्य केवल आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि समाजहित एवं जनकल्याण के कार्यों को भी बढ़ावा देना होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गौसेवा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है और प्रत्येक सक्षम व्यक्ति को इस पुण्य कार्य में अपनी सहभागिता निभानी चाहिए। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व भी कुछ वर्ष पहले श्री रामलीला ग्राउंड, ऐलनाबाद में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के दौरान श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित 51,000 रुपए की चढ़ावा राशि उन्होंने शिव नंदीशाला के संचालन एवं गौसेवा के लिए समर्पित की थी। उस समय भी उनके इस निर्णय की क्षेत्रभर में सराहना हुई थी। इसी सेवा परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 12 से 20 जुलाई, 2026 तक श्री राधा माधव महिला मंडल, ऐलनाबाद द्वारा सनातन धर्मशाला में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में प्राप्त 21,000 रुपए की चढ़ावा राशि भी उन्होंने बिना किसी व्यक्तिगत उपयोग के शिव नंदीशाला को दान कर दी। शिव नंदीशाला, ऐलनाबाद के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने महंत भरत मुनि जी के इस सेवा भाव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका यह सहयोग केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि समाज को सेवा, दान और परोपकार की भावना से जोड़ने वाला प्रेरणादायक संदेश है। ऐसे कार्य धार्मिक आयोजनों को समाजसेवा से जोड़ने की उत्कृष्ट मिसाल प्रस्तुत करते हैं। स्थानीय श्रद्धालुओं ने भी महंत भरत मुनि जी के इस निर्णय की सराहना करते हुए कहा कि यदि धार्मिक आयोजनों से प्राप्त सहयोग का एक हिस्सा जनकल्याण एवं गौ संरक्षण जैसे कार्यों में लगाया जाए तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। महंत जी के सेवा कार्य समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। – **रमेश भार्गव**

देहरा तिजारा में दो दिवसीय धार्मिक महोत्सव की तैयारियाँ पूर्ण

29 जुलाई को चातुर्मास स्थापना एवं गुरु पूर्णिमा, 30 जुलाई को श्रद्धापूर्वक मनाई जाएगी वीर शासन जयंती

देहरा तिजारा. शाबाश इंडिया। श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, देहरा तिजारा में विराजमान परम पूज्य भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में 29 एवं 30 जुलाई, 2026 को दो दिवसीय भव्य धार्मिक महोत्सव आयोजित किया जाएगा। चातुर्मास के अंतर्गत होने वाले इन आयोजनों की सभी तैयारियाँ अंतिम चरण में हैं। सकल जैन समाज एवं चातुर्मास समिति द्वारा व्यापक स्तर पर व्यवस्थाएँ की जा रही हैं, जिससे पूरे क्षेत्र में श्रद्धा और उत्साह का वातावरण बना हुआ है। 29 जुलाई को चातुर्मास स्थापना महोत्सव एवं गुरु पूर्णिमा महापर्व श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक उल्लास के साथ मनाया जाएगा। प्रातःकाल भगवान का अभिषेक, शांतिधारा, गुरु पूजन, गुरु वंदना, विशेष पूजा-अर्चना, भक्ति एवं प्रवचन सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। श्रद्धालु गुरुदेव के श्रीचरणों में श्रद्धा अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त करेंगे तथा धर्म, संयम, स्वाध्याय और आत्मकल्याण के मार्ग पर चलने का संकल्प लेंगे। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महाराज अपने मंगल प्रवचनों में गुरु की महिमा, चातुर्मास के आध्यात्मिक महत्व तथा आत्मशुद्धि और आत्मोन्नति के विषय में मार्गदर्शन देंगे। वे श्रद्धालुओं को गुरु के बताए मार्ग पर चलकर जीवन को सार्थक बनाने का संदेश देंगे।

30 जुलाई : वीर शासन जयंती का आयोजन

30 जुलाई को वीर शासन जयंती श्रद्धा एवं धार्मिक उत्साह के साथ मनाई जाएगी। इस अवसर पर भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अनेकांत और करुणा के संदेश पर आधारित विशेष प्रवचन होंगे। साथ ही भक्ति, पूजन एवं विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से श्रद्धालु जिनशासन की महिमा का गुणगान करेंगे और भगवान महावीर के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लेंगे।

ध्वजारोहण के साथ अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी के 57वें जन्मोत्सव का शुभारंभ

गुरु पुष्पदंतसागर जी ने शिष्य को लगाया गले, 15 अगस्त को 'पट्टाचार्य' पद से विभूषित करने की घोषणा

सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागर जी महाराज के 57वें अवतरण दिवस (जन्मोत्सव) का शुभारंभ पुष्पगिरि तीर्थ में ध्वजारोहण के साथ श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में हुआ। इस अवसर पर गुरु-शिष्य के भावपूर्ण मिलन, वृक्षारोपण, निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान शिविर तथा विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि प्रसन्नसागर इस युग के महातपस्वी संत हैं। उनकी साधना, समर्पण और मधुरता से मैं अत्यंत प्रभावित हूं। जो कार्य माता-पिता भी नहीं कर सके, वह उनके शिष्यत्व ने कर दिखाया। उनकी साधना को देखकर लगता है कि उनके भीतर का परमात्मा जागृत हो चुका है। इस अवसर पर गणाचार्य श्री ने मंच पर अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी को गले लगाकर स्नेह व्यक्त किया तथा उनकी तप-साधना और समर्पण से अभिभूत होकर 15 अगस्त को उन्हें 'पट्टाचार्य' (पट्ट विभूषण) पद से विभूषित करने की घोषणा की। घोषणा होते ही पूरा पंडाल गुरु-शिष्य के जयघोषों से गूंज उठा। प्रचार-प्रसार संयोजक रोमिल पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 4 बजे दिव्य मंगल पाठ से हुआ। इसके बाद भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनालय में गणाचार्य श्री के सान्निध्य में श्रीजी का कलशाभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न हुई। इस दौरान गणाचार्य श्री ने भजन गाते हुए तालियां बजाकर शिष्य को जन्मोत्सव का विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। अंतर्मना आचार्य श्री ने त्रिवार वंदना कर गुरु का आशीर्वाद ग्रहण किया। इस अवसर पर गणाचार्य श्री ने आशीर्वचन देते हुए कहा, ''तुम्हें शीघ्र ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो, तुम शीघ्र भगवान बनो।'' इसके पश्चात बैंड-बाजों के साथ गणाचार्य संघ पुष्पगिरि तीर्थ की शीर्ष पहाड़ी पर पहुंचा, जहां नागपुर के लाभार्थी अनिल एवं मीणा जी (विद्यासागर रोडवेज) के सौजन्य से ध्वजारोहण कर जन्मोत्सव समारोह का विधिवत शुभारंभ किया गया। गुरु सान्निध्य में वृक्षारोपण भी किया गया। भगवान पद्मप्रभु चिकित्सालय में पुष्पगिरि तीर्थ एवं हॉपवेल हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर, आयुष्मान कार्ड पंजीयन एवं रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं क्षेत्रवासियों ने लाभ लिया। साथ ही मां जिनवाणी स्कूल सहित क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए 'हर माह एक उपवास' विषय पर प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। दोपहर में भव्य पंडाल में दीप प्रज्वलन एवं सोनकच्छ जैन समाज की महिलाओं के मंगलाचरण नृत्य के साथ मुख्य समारोह का शुभारंभ हुआ। ग्वालियर की बालिकाओं ने भक्ति नृत्य प्रस्तुत किया तथा मुनि नेगमसागर जी महाराज ने मंगलाचरण भजन प्रस्तुत किया। समारोह में विधायक डॉ. राजेश सोनकर, जिला कलेक्टर ऋतुराज सिंह, अपर कलेक्टर संजीव जैन, कवि शशिकांत यादव सहित अनेक अतिथियों का पुष्पगिरि परिवार द्वारा सम्मान किया गया। इसके बाद श्रद्धालुओं ने गुरु पूजा कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। सायंकाल गुरु भक्ति, आनंद यात्रा, आरती एवं भजन संध्या का आयोजन हुआ। इस अवसर पर संघपति दिलीप भाई हुमड़, सोनकच्छ जैन समाज अध्यक्ष महेंद्र पाटोदी, प्रदीप तिजारावाला, हॉपवेल हॉस्पिटल संचालक मंगल सिंह सेंधव, डॉ. नरेंद्र वर्मा, दंत चिकित्सक डॉ. अशोक सेंधव, पुष्पगिरि अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा, सचिव सुभाष जैन, अंतर्मना ट्रस्ट अध्यक्ष अशोक बेलावत, शांतिलाल बेलावत, समन्वयक आकाश जैन एवं निरंजन सिंह सेंगर सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन उपाध्याय मुनि पीयूषसागर जी महाराज ने किया, जबकि आभार पुष्पगिरि तीर्थ समिति के अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा ने व्यक्त किया।

जन्मोत्सव पर शिष्यों ने अर्पित की श्रद्धांजलि

अवसर पर मुनि एवं आर्यिकाओं ने अंतर्मना आचार्य श्री के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए उनके तप, त्याग, संयम और आध्यात्मिक व्यक्तित्व की सराहना की। मुनि अप्रमतसागर जी ने कहा कि गुरुदेव ने हजारों लोगों को संयम मार्ग पर अग्रसर किया है और वे असंख्य भव्य जीवों के जीवन के आधार हैं। मुनि सामायिकसागर जी ने उन्हें पारस के समान बताते हुए कहा कि वे अपने शिष्यों का जीवन भी पारस बना देते हैं। मुनिश्री परिमलसागर जी ने कहा कि गुरुदेव जैन धर्म की शान हैं और उनका नाम जीवनभर स्मरणीय रहेगा। मुनि अर्धसागर जी ने कहा कि गुरु के यश और साधना की गाथा युगों-युगों तक अमर रहेगी। आर्यिका पुण्यप्रभा माताजी ने इस दिवस को आध्यात्मिक प्रकाश का पर्व बताया। आर्यिका चरित्रप्रभा माताजी ने कहा कि वह भूमि, वह माता और वे सभी धन्य हैं जिन्हें गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त हुआ। गणिनी आर्यिका ज्ञानप्रभा माताजी ने गुरुदेव के दीर्घायु, तेजस्वी एवं मंगलमय जीवन की कामना की।

प्रचार-प्रसार संयोजक रोमिल पाटनी (सोनकच्छ),
नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल (औरंगाबाद)